१८४२ यददो वात ते गृहेऽमृतं निहितं गुहा । तस्य नो धेहि जीवसे ॥ ३ ॥ ११ (पौ) ॥
[धा० १० । उ० १ । स्व० नास्ति] (ऋ. १०।१८६।३)

१८४३ अभि वाजी विश्वरूपो जनित्रꣳ हिरण्ययं बिभ्रदर्कꣳ सुपर्णः ।
सूर्यस्य भानुमृतुथा वसानः परि स्वयं मेधमज्रो जजान ॥ १ ॥

१८४४ अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपं तेजः पृथिव्यामधि यत्संबभूव ।
अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः ॥ २ ॥

१८४५ अयꣳ सहस्रा परि युक्ता वसानः सूर्यस्य भानुं यज्ञो दाधार ।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा धर्ता दिवो भुवनस्य विश्पतिः ॥ ३ ॥ १२ (पु) ॥
[धा० २० । उ० १ । स्व० २]

१८४६ नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तꣳ हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१२३।६)

[१८४२] हे (वात) वायो ! (ते गृहे) तेरे घरमें (यत् अदः गुहा अमृतं निहितं) जो गुप्त स्थानमें यह अमृत रखा हुआ है। हे (विभावसो) तेजस्वी धन पासमें रखनेवाले वायो ! (तस्य नः धेहि) वह अमृत हमें दे ॥३॥

[१८४३] (सुपर्णः वाजी) गरुडके समान बलवान् (विश्वरूपः अज्रः) अनेक रूपोंसे युक्त और पापनाशक अग्नि (जनित्रं अर्कं) अपने उत्पत्ति स्थान - अरणियों - को अपने तेजसे व्याप्त करता है और (हिरण्ययं अभि बिभ्रत्) सोनेके समान तेज धारण करता है। (सूर्यस्य भानुं) सूर्यके तेजको (ऋतथा वसानः) ऋतुके अनुसार धारण करके (मेधं परि स्वयं जजान) यज्ञको स्वयं सम्पन्न करता है ॥ १ ॥

[१८४४] (रेतः विश्वरूपं यत्तेजः) वीर्यके समान अनन्त रूपवाले वे तेज (अप्सु शिश्रिये) जलके आश्रयसे रहते हैं। (यत् पृथिव्यां अधि सं बभूव) जो पृथ्वी पर है और (अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः) जो अन्तरिक्षमें अपनी महिमाको फैलाता है, (वृष्णः अश्वस्य रेतः कनिक्रन्ति) बलवान् सोमका वीर्य प्राप्त करता हुआ तुझे प्राप्त होता है ॥ २ ॥

[१८४५] (दिवः भुवनस्य धर्ता) द्युलोक और पृथ्वीलोकको धारण करनेवाला (विश्पतिः) प्रजाओंका पालन करनेवाला (सहस्रदाः शतदाः भूरिदावा) यज्ञ करनेवालोंको हजारों, सैकडों तरहके बहुतसा धन देनेवाला (यज्ञः अयं) यज्ञ करनेवाला यह अग्नि (युक्ता सहस्रा परि वसानः) अपने पास रखी हुई हजारों किरणोंको फैलाता हुआ (सूर्यस्य भानुं दधार) सूर्यके तेजको धारण करता है ॥ ३ ॥

[१८४६] हे वेन ! (सुपर्णं पतन्तं) गरुडके समान उडनेवाले (हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं) सोनेके समान पंखवाले वरुणके दूतको (यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युं) नियमन करनेवाले विद्युत् रूप अग्निके स्थान अन्तरिक्षमें पक्षीके समान उडनेवाले सब जगत्का पोषण करनेवाले (त्वा हृदा वेनन्तः) तुझे अन्तःकरणसे प्राप्त करनेकी इच्छा करते हुए स्तोता (नाके यत् अभ्यचक्षत) अन्तरिक्षमें जब देखते हैं, तब (उप) तेरे पास आते हैं ॥ २ ॥

१८४७ ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात्प्रत्यङ्चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि ।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वर्ण नाम जनत प्रियाणि ॥ २ ॥ (ऋ. १०।१२३।७)

१८४८ द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन् ।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि ॥ ३ ॥ १३ (खु) ॥
[धा० २६ । उ० २ । ख० ९] (ऋ. १०।१२३।८)

॥ इति सप्तमः खण्डः ॥ ७ ॥

॥ इति नवमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥ ९-२ ॥

॥ इति विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

[१८४७] (ऊर्ध्वः गन्धर्वः प्रत्यङ्) ऊपर रहनेवाला जलोंको धारण करनेवाला वेन जब हमारे सामने आकर (नाके अधि अस्थात्) अन्तरिक्षमें स्थिर होता है, तब वह (अस्य चित्रा आयुधानि बिभ्रत्) अपने विलक्षण शस्त्रोंको धारण करके (दृशे सुरभिं अत्कं वसानः) देखनेके लिए सुन्दर रूप धारण करते हुए (स्वः न) सूर्यके समान (नाम प्रियाणि जनत) प्रिय जलोंको उत्पन्न करता है ॥ २ ॥

[१८४८] (विधर्मन् द्रप्सः) विशेष गुणोंसे युक्त, प्रवाह युक्त (गृध्रस्य चक्षसा पश्यन्) गृध्र - सूर्य - के तेजसे तेजस्वी होकर देखनेवाला वेन (यत् समुद्रं अभि जिगाति) जब पानीसे भरे हुए मेघके पास जाता है, तब (भानुः शुक्रेण शोचिषा) सूर्य स्वच्छ तेजसे (तृतीये रजसि चकानः) तीसरे द्युलोकमें प्रकाशित होकर (प्रियाणि चक्रे) प्रिय जलोंको उत्पन्न करता है ॥ १ ॥

॥ यहां सातवां खण्ड समाप्त हुआ ॥

॥ विंशोऽध्यायः ॥

विंश अध्याय

इस बीसवें अध्यायमें इन्द्र, अग्नि, सूर्य, आप् और सोम देवताओंका वर्णन है, उन्हें अब क्रमसे देखिए—

इन्द्र

१ इन्द्रः नाम श्रुतः, ऋत्वियः ब्रह्मा [१७६८]- यह इन्द्रके नामसे विख्यात है, यह ऋतुओंके अनुसार कार्य करनेवाला और उत्तम ज्ञानी है ।

२ हे शवसः पते ! त्वां इत् संयतः न गिरः यन्ति [१७६९]- हे बलके स्वामी इन्द्र ! संयमी पुरुषकी जैसी स्तुति होती है, उसप्रकार तेरी स्तुति होती है ।

३ हे इन्द्र ! यथा पथा रुतयः त्वत् रातयः वि यन्तु [१७७०]- हे इन्द्र ! जिसप्रकार बडे मार्गसे अनेक छोटे मार्ग निकलते हैं, उसीप्रकार तुझसे अनेक प्रकारके दान उपासकोंकी ओर निकलते हैं ।

४ ऊतये सुम्नाय तुविकूर्मिं ऋतीषहं शविष्ठं सत्पतिं त्वा इन्द्रं आवर्तयामसि [१७७१]- स्वसंरक्षण और सुख प्राप्तिके लिए अनेक उपयोगी कर्म करनेवाले, हिंसक शत्रुओंको नष्ट करनेवाले, बलवान् सज्जनोंका पालन करनेवाले तुझ इन्द्रको हम अपने पास बुलाते हैं ।

५ तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवः मते ! विश्वथा

महित्वना आ पप्राथ [१७७२]- महा बलवान्, बहुत कार्य करनेवाले शक्तिमान् और बुद्धिमान् इन्द्र ! तू सब प्रकारकी महत्त्वपूर्ण शक्तियोंसे युक्त होकर व्याप्त होता है।

६ यस्य महः ते हस्ता ज्मा-यन्तं हिरण्ययं वज्रं परि ईयतुः [१७७३]- जिस महान् पुरुषके - तेरे - हाथ पृथ्वी पर संचार करनेवाले वज्रको धारण करते हैं, वज्रका प्रयोग करते हैं।

७ शाकमना शाकः महः शूरः यत् चिकेत, तत् सत्यं इत् मोघं न [१७८३]- अपनी शक्तिसे सामर्थ्य सम्पन्न ऐसा महान् शूर इन्द्र जो करनेका निश्चय करता है, वह निश्चयसे करके दिखाता है, वह निष्फल नहीं होता।

८ स्पार्हं वसु जेता, उत दाता [१७८३]- स्पृहणीय धन वह जीतकर लाता है और उसका दान करता है।

९ एभिः वृष्ण्या पौंस्यानि आ ददे [१७८४]- इन मरुतोंके साथ रहकर वह इन्द्र सामर्थ्यसे होनेवाले कार्य करता है।

१० येभिः वृत्रहत्याय वज्री औक्षत् [१७८४]- इन मरुतोंके साथ रहकर वह वज्रधारी इन्द्र शत्रुको मारनेके लिए वृष्टि करता है, बाणोंकी वर्षा करता है।

११ वृत्रहन्तमः शतक्रतुः इन्द्रः द्विता विदे [१७९१] -शत्रुको मारनेवाला, सैकडों कर्म करनेवाला इन्द्र दोनों ही तरहके काम करता है।

१२ महेवृधे महे प्रभरध्वम् [१७९३]- महान् वृद्धि हो, इसलिए महान् इन्द्रको भरपूर हवि अर्पण करो।

१३ प्रचेतसे सुमतिं प्रकृणुध्वं [१७९३]- ज्ञानी इन्द्रके बारेमें उत्तम भावना हृदयमें धारण करो।

१४ चर्षणि-प्राः विशः प्रचर [१७९३] प्रजाओंका पोषण करनेवाला तू प्रजाओंकी सहायता कर।

१५ हे विप्राः ! उरुव्यचसे महिने इन्द्राय सुवृक्तिं ब्रह्म जनयन्त, तस्य व्रतानि धीराः न मिनन्ति [१७९४] हे विद्वानो ! विशेष व्यापक महान् इन्द्रकी उत्तम स्तुति करो।

१६ सत्रा राजानं अनुत्तमन्युं इन्द्रं एव वाणीः सहध्यै दधिरे [१७९५]- सबका राजा, जिसके क्रोधके आगे कोई भी टिक नहीं सकता, ऐसे उस इन्द्रको शत्रुको हरानेके लिए स्तुति आगे करती है।

१७ हे इन्द्र ! यत् यावतः, एतावत् अहं ईशीय [१७९६]- हे इन्द्र ! जितने धनका तू स्वामी है, उतने धनका मैं भी स्वामी होऊं।

१८ पापत्वाय न रंसिषम् [१७९६]- पापी होनेके लिए मैं किसीको धन नहीं दूंगा।

१९ हे मघवन् ! त्वत् अन्यत् आप्यं नहि, [१७९७] -हे धनवान् इन्द्र ! तेरे सिवाय हमारा कोई दूसरा भाई नहीं है।

२० वस्यः पिता च न अस्ति [१७९७]- तेरे सिवाय प्रशंसनीय संरक्षक भी दूसरा कोई नहीं।

२१ अस्मै इन्द्राय पुरो रथं शूषं सु प्र अर्चत [१८०१] - इस इन्द्रके रथके आगे जानेवाले बलकी स्तुति करो।

२२ समत्सु सांगे अभीके चित् लोककृत् वृत्रहा अस्माकं चोदिता बोधि [१८०१]- युद्धमें शत्रुके सेनाके अपने ऊपर चढते हुए चले आने पर, लोगोंका कल्याण करनेवाला और शत्रुका नाश करनेवाला इन्द्र हमारा प्रेरक है, यह तू जान।

२३ अन्यकेषां धन्वसु अधि ज्याकाः नभन्ताम् [१८०१]- शत्रुके धनुषकी डोरियां टूट जायें।

२४ हे इन्द्र ! अहिं अहन्, अशत्रुः जज्ञिषे, विश्वं वार्यं पुष्यसि [१८०२]- हे इन्द्र ! तू अहिको मारकर शत्रुरहित हो गया है। तू सब स्वीकार करने योग्य धन अपने पास बढाता है।

२५ नः विश्वाः अरातयः अर्यः सु विनशन्त, यः नः जिघांसति, शत्रवे वधं अस्ता असि [१८०३]- हमारे सब शत्रु जो हम पर चढाई करते हैं नष्ट हो जायें। जो हमें मारना चाहता है, उस पर तू शस्त्र फेंक।

इन्द्र सुप्रसिद्ध है। वह महान् ज्ञानी और ठीक समय पर काम करनेवाला है। वह संयमी है। अनेक उपयोगी कार्य वह करता है। वह अत्यन्त सामर्थ्यवान् है। वह सज्जनोंका अच्छी तरह पालन करता है। वह हाथोंमें वज्र धारण करता है और उनका उपयोग शत्रुके नाश करनेके लिए करता है। जो करनेका निश्चय करता है, वह कार्य वह करता ही है। सामर्थ्यसे होनेवाले महान् महान् कार्य वह करता है। वह शत्रुका नाश करके आर्योंकी रक्षा करता है। वह दोनों ही काम करता है। वह प्रजाओंका पालन अच्छी तरह करता है। इसलिए उस इन्द्रके बारेमें उत्तम विचार धारण करने-चाहिए। वह इन्द्र सबका राजा है। उसका क्रोध जिस पर पडता है वह नष्ट हो जाता है। इसलिए उसे प्रसन्न रखना चाहिए। इन्द्रके सिवाय दूसरा कोई भी सच्चा मित्र नहीं है। वह ही सबका कल्याण करनेवाला है। युद्धमें वह ही सच्चा संरक्षक है। उसने राक्षसोंको मारा इस कारण उसका कोई

भी शत्रु बचा नहीं। हमारे शत्रुओंको भी इन्द्र मार दे और हमें भी शत्रुरहित करे।

अग्नि

अब अग्निका वर्णन देखिये—

१ यः द्विजन्मा सः होता अयं विश्वा वार्याणि श्रवस्या दधे [१७७६]- दो अरणियोंसे उत्पन्न हुआ हुआ, देवोंको बुलाकर यज्ञस्थानमें लानेवाला यह अग्नि सब चाहने योग्य धनोंको और यशस्वी कर्मोंको धारण करता है।

२ हे अग्ने ! भद्रस्य दक्षस्य साधोः ऋतस्य बृहतः क्रतोः रथीः बभूथ [१७७८]- हे अग्ने ! कल्याणकारक और बल बढानेवाले उत्तम सत्य ऐसे महान् यज्ञका तू संधालक होता है। यज्ञ कल्याण करता है, बल बढाता है ऐसा यह यज्ञ अग्निमें होता है।

३ हे अग्ने ! हव्यवाहनः दूतः अध्वराणां रथीः असि। अस्मे सुवीर्यं बृहत् श्रवः धेहि [१७८१]-हे अग्ने ! तू हवनीय द्रव्य देवोंके पास पहुंचानेवाला दूत और अहिंसापूर्ण यज्ञका संचालक है। हमें उत्तम वीर्यसे युक्त महान् यश दे। अग्निमें हवन किए गए पदार्थ अति सूक्ष्म हो जाते हैं और अग्नि उन्हें जहां पहुंचाना होता है वहां पहुंचा देता है। यह अग्नि हिंसाके बिना यज्ञ करता है। इस यज्ञमें हिंसा नहीं होती। इन यज्ञोंसे वीर्य बढता है और यश भी बढता है।

४ विरुक्मता ओजसा पुरुचित् दीद्यानः द्रुहन्तरः परशुः न द्रुहन्तरः भवति [१८१५]- विशेष तेजस्वी और बलसे अधिक प्रकाशमान् होकर, शत्रुओंको काटनेवाले फरसेके समान, द्रोह करनेवालोंका नाश करनेवाला होता है।

५ यस्य समृतौ वीडु चित् श्रुवत् [१८१५]- जिसके साथ रहनेसे शत्रुको भी हराना आसान हो जाता है।

६ निःषहमाणः यमते [१८१५]· शत्रुको हराकर उसका नियमन करता है।

७ पावकवर्चाः शुक्रवर्चाः अनूनवर्चाः भानुना उदियर्षि [१८१७]- शुद्धता करनेवाली किरणोंसे युक्त, निर्मल किरणोंसे युक्त, पूर्ण तेजस्वी, ऐसा तू अपने तेजसे उदयको प्राप्त होता है।

८ अध्वरस्य हृष्कर्त्तारं प्रचेतसं महः राधसः क्षयन्तं वामस्य रातिं [१८२०]- यज्ञ करनेवाले, ज्ञानी, बहुत धन पासमें रखनेवाले ऐसे अग्निकी हम स्तुति करते हैं।

९ सुभगां महीं इषं सानसिं रयिं दधासि [१८२०[-अधिक भाग्ययुक्त अन्न और सेवन करने योग्य धन अग्नि देता है।

१० जनाः ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतं अग्निं सुम्नाय पुरः दधिरे [१८२१]- लोग यज्ञ करनेवाले, पूज्य, सर्वत्र दर्शनीय अग्निको अपने सुखकी प्राप्तिके लिए अपने आगे स्थापित करते हैं।

११ हे अग्ने ! त्वं यस्य सख्यं आविथ, सः सुवीराभिः वाजकर्मभिः तव ऊतिभिः प्रतरति [१८२२] -हे अग्ने ! तू जिसके साथ मित्रता करता है, वह उत्तम वीर पुत्रोंसे और बल बढानेवाले कर्मोंसे युक्त तेरे संरक्षणोंसे संकटोंसे पार हो जाता है।

१२ हे अग्ने ! ऊर्जा इषा आयुषा निवर्तस्व। अंहसः नः पाहि [१८३२]- हे अग्ने ! तू बल, अन्न और आयुके साथ हमारे पास आ। पापसे हमारी रक्षा कर।

१३ हे अग्ने ! रय्या सह निवर्त्तस्व [१८३३]- हे अग्ने ! तू धनके साथ हमारे पास आ।

यह अग्नि दो अरणियोंकी रगडसे उत्पन्न होता है। वह कल्याण करनेवाले बल बढाता है। यह हवनमें डाले गए पदार्थोंको जहां पहुंचाना होता है वहां पहुंचाता है और उत्तम वीर्य बढाता है। जिसप्रकार फरसा लकडीको काटता है, उसीप्रकार यह अग्नि रोगबीजोंको नष्ट करती है। इसकी सहायतासे बलवान् रोगबीज भी नष्ट हो जाते हैं। इसका प्रकाश पवित्रता करनेवाला है। यह अग्नि उत्तम बल बढानेवाले अन्न और धन देता है। सुख और आरोग्यके लिए ज्ञानी लोग इस अग्निकी स्थापना करते हैं। इस अग्निमें हवन करना बल बढानेवाला कर्म है। अग्निसे तैय्यार किए गए अन्न मनुष्योंके बल, आरोग्य और आयु बढाते हैं।

आपः (जल)

१ आपः मयोभुवः, ताः नः ऊर्जे दधातन, महे रणाय चक्षसे [१८३७]- जल निःसन्देह सुख बढानेवाले हैं। वे हमारे बल बढानेवाले हों तथा वे महान् और सुन्दर दर्शन करानेवाले हों।

२ इह यः वः शिवतमः रसः तस्य नः भाजयत [१८३८]- यहां जो तुममें अत्यन्त कल्याण करनेवाला रस है, उसका सेवन हमारे द्वारा हो, ऐसा कर।

३ हे आपः ! यस्य क्षयाय जिन्वथ, तस्मै अरं वः

गमाम [१७३९]– हे जलो ! जिसको सुखसे निवास करानेके लिए तुम प्रयत्न करते हो, वे कार्य हम तुमसे पूर्णरूपसे करवायें।

पानी आरोग्य बढानेवाले और सुख देनेवाले हैं। उससे शरीरका बल बढता है, और शरीरकी सुन्दरता बढती है। पानीमें जो रस है, वह कल्याण करनेवाला है। उसे पानेवाला मनुष्य निरोगी होकर सुखी होता है। इन मंत्रोंमें जल चिकित्साका वर्णन है। पानी एक उत्तम औषधि है। जल-चिकित्सासे बहुत रोग दूर हो सकते हैं। इस प्रकार शुद्ध जल अत्यन्त उपयोगी है।

वायु

१ वातः नः हृदे शंभु मयोभु भेषजं आवातु, नः आयूंषि प्रतारिषत् [१८४०]- वायु हमारे हृदयका आनन्द बढानेवाला और आरोग्य बढानेवाला होकर बहे और हमारी आयु बढावे।

२ हे वात ! ते गृहे यत् अदः गुहा अमृतं निहितं, तस्य नः धेहि [१८४२]– हे वायो ! तेरे घरमें जो अमृत रखा हुआ है, उसे हमें दे।

३ हे वात! नः पिता, भ्राता, सखा असि, नः जीवातवे कृधि [१८४१]- हे वायो ! तू ही हमारा पिता, भाई और मित्र है, इसलिए तू हमारा जीवन दीर्घ कर।

वायुमें औषधिका गुण है, वायु उन गुणोंको लेकर हमारे पास आवे और हमारी उमर बढावे। वायुमें अमृत है। इस-लिए वायुका ठीक तरह सेवन करनेसे मृत्यु दूर होकर आयु बढती है।

सोम

१ यः जागार तं अयं सोम आह, तव सख्ये अहं अस्मि [१८२६]- जो जागता रहता है, उससे यह सोम कहता है कि तेरी मित्रतामें मैं हूँ। तेरा मैं मित्र हूँ।

जागृत रहनेवाले लोगोंसे सोम मित्रता करनेवाला है। वह उसका कल्याण करनेवाला है। सोमका उपयोग जागृत रहकर करना चाहिए।

सुभाषित

१ वेधसः कारवः ज्योतिः जज्ञानं सृजन्ति [१७६६] – कार्य करनेवाले ज्ञानी तेजस्विता प्रकट करनेवालेको शुद्ध करते हैं।

२ पुनानाय ते तानि सुषहा [१७६७]- शुद्ध होने-वाले तुझे वे उत्तम प्रकारसे रक्षा करनेवाले बल प्राप्त होते हैं।

३ एषः ऋत्वियः ब्रह्मा गृणे [१७६८]– यह ऋतुओंके अनुसार कार्य करनेवाला ज्ञानी प्रशंसित होता है।

४ हे शवसः पते ! संयतः न त्वां गिरः यन्ति [१७६९]- हे बलके स्वामी इन्द्र ! जैसे मनुष्य संयमी पुरुषको प्राप्त होते हैं, उसीप्रकार स्तुतियां तुझे प्राप्त होती हैं।

५ हे इन्द्र ! यथा पथा स्रुतयः, त्वत् रातयः वि यन्तु [१७७०]- हे इन्द्र ! जैसे बडे रास्तेसे छोटे - छोटे रास्ते निकलते हैं, उसीप्रकार तुझसे अनेक प्रकारके दान निकलते हैं।

६ ऊतये सुम्नाय तुविकूर्मिं ऋतीषहं शविष्ठं सत्पतिं त्वा इन्द्रं आवर्तयामसि [१७७१]- स्वसंरक्षण और सुख प्राप्तिके लिए अनेक कर्म करनेवाले हिंसक शत्रुओंका नाश करनेवाले इन्द्रको हम उपासना करते हैं।

७ तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवः मते ! विश्वया महित्वना आ पप्राथ [१७७२]- हे महा बलवान् अनेक कर्म करनेवाले, शक्तिमान् और बुद्धिमान् इन्द्र ! सब प्रकारके महत्वपूर्ण शक्तियोंके साथ तू सर्वत्र व्याप्त है।

८ भद्रस्य दक्षस्य साधोः ऋतस्य बृहतः क्रतोः रथीः बभूथ [१७७८]– कल्याण करनेवाले, बल बढाने-वाले, उत्तम, सत्य और बडे - बडे कर्मोंका तू संचालक है।

९ ज्योतिः स्वः न, विश्वेभिः अनीकैः सुमनाः नः अर्वाङ् भव [१७७९]- ज्योति स्वरूप सूर्यके समान, सब तेजोंसे युक्त उत्तम मन धारण करनेवाला तू हमारे पास आ।

१० विवस्वत् चित्रं राधः आ वह, अद्य उषर्बुधः देवान् आ वह [१७८०]– तेजस्वी और विलक्षण धन लेकर आ और आज सबेरे प्रातःकाल उठनेवाले विद्वानोंको लेकर इस यज्ञमें आ।

११ अध्वराणां रथीः असि [१७८१]- हिंसारहित कर्मोंका तू संचालक है।

१२ अस्मे सुवीर्यं बृहत् श्रवः धेहि [१७८१]– हमें उत्तम पराक्रम करनेके सामर्थ्य और महान् यश दे।

१३ विधुं समने बहूनां द्रुाणं युवानं सन्तं पलितः जगार [१७८२]- अनेक कार्य करनेवाले, युद्धमें बहुतसे शत्रुओंको मारनेवाले तरुणको भी वृद्धावस्था निगल जाती है।

१४ देवस्य महित्वना काव्यं पश्य [१७८२]– देवके महिमासे भरे हुए इस काव्यको देखो।

१५ अद्य ममार स ह्यः समान [१७८२]- आज जो मर गया वही कल प्रकट होता है। 'समान' (सं-आन) उत्तम रीतिसे प्राण धारण करता है।

१६ यत् चिकेत, तत् सत्यं इत्, मोघं न [१७८३] - इन्द्र जो कर्तव्य करनेका निश्चय करता है, उसे सत्य करके दिखाता है, उसे व्यर्थ नहीं जाने देता।

१७ स्पार्हं वसु जेता उत दाता [१७८३]- वह चाहने योग्य धनको जीतकर लाता है और उसका दान करता है।

१८ वृष्ण्या पौंस्यानि आ ददे [१७८४]- वह बल बढानेवाले पौरुषके काम करता है।

१९ ये देवाः महः क्रियमाणस्य कर्मणः ऋते कर्म उदजायन्त [१७८४]- जो देव महत्वके करने योग्य कार्योंमें सत्य कर्म ही करके दिखाते हैं।

२० हे सूर्य ! महान् असि बट् [१७८८]- हे सूर्य! तू निश्चयसे महान् है।

२१ आदित्य ! महान् असि बट् [१७८८]- हे सूर्य ! तू महान् है, यह सत्य है।

२२ ते सतः महः महिमा [१७८८]- तेरे जैसे महान्-की महिमा भी महान् है।

२३ पनिष्टम ! महा महान् असि [१७८८]- हे स्तुत्य ! तू अपनी महिमासे महान् है।

२४ हे सूर्य ! श्रवसा महान् असि बट् [१७८९] - हे सूर्य ! तू अपने महान् यशसे महान् है। यह सत्य है।

२५ देवानां महा महान् असि [१७८९]- तू देवोंके महत्वके कारण बडा है।

२६ असुर्यः पुरोहितः [१७८९]- तू असुरोंका नाश करनेवाला है इसलिए तुझे आगे स्थापित किया है।

२७ ज्योतिः विभुः अदाभ्यं [१७८९]- तेरे तेज व्यापक और न दबनेवाले हैं।

२८ वृत्रहन्तमः शतक्रतुः इन्द्रः छिता विदे [१७९१]- वृत्रको मारनेवाला, सैकडों कर्म करनेवाला इन्द्र दोनों प्रकारके कार्य करता है। आर्योंका संरक्षण और दुष्टोंका नाश ये दोनों उसके काम हैं।

२९ वः महेवृधे महे प्रभरध्वम् [१७९३]- अपने महान् संवर्धनके लिए महान् वीरका विशेष सम्मान करो। उसे जो देना हो, भरपूर दो।

३० प्र चेतसे सुमतिं प्रकृणुध्वं [१७९३]- विशेष बुद्धिमान्के विषयमें अपने उत्तम विचार बना।

३१ चर्षणिप्राः विशः प्रचर [१७९३]- प्रजाओंका पोषण करनेवाला तू सब प्रजाओंका पोषण कर।

३२ हे विप्राः ! उरुव्यचसे महिने इन्द्राय सुवृक्तिं ब्रह्म जनयन्त, तस्य व्रतानि धीराः न मिनन्ति [१७९४] हे ब्राह्मणो ! विशेष व्यापक इन्द्रके लिए उत्तम स्तुतिके स्तोत्र कहो। उसके कार्य बुद्धिमान् लोग विनष्ट नहीं कर सकते।

३३ सत्रा राजानं अनुत्तमन्युं इन्द्रं पत्न्य धाणीः सहध्यै दधिरे [१७९५]- सबका एक ही समयमें राजा होनेवाले, जिसके क्रोधके आगे कोई ठहर नहीं सकता, ऐसे इन्द्रको ही हमारी वाणी शत्रुओंको हरानेके लिए आगे करती है।

३४ हर्यश्वाय आपीन् सं वर्धय [१७९५]- इन्द्रकी स्तुति करनेके लिए मित्रको प्रोत्साहन दो।

३५ हे इन्द्र ! यत् यावतः, एतावत् अहं ईशीय [१९७६]- हे इन्द्र ! जितने धनका तू स्वामी है, उतनेका ही मैं स्वामी होऊं।

३६ स्तोतारं इत् दधिषे, पापत्वाय न रंसिषम् [१७८६]- स्तोताको मैं धन देकर उसका धारण करूंगा, पर उसे पापमें प्रवृत्त नहीं होने दूंगा। पाप करनेमें वह आनन्द माने ऐसा उसे अवनत नहीं होने दूंगा।

३७ कुहचिद् विदे महयते दिवे दिवे रायः शिक्षेयं इत् [१७९७]- इन्द्र कहता है को कहीं पर भी रहकर महत्वके कार्य करनेवालेको मैं धन देता हूँ।

३८ हे मघवन् ! त्वत् अन्यत् आप्यं नहि, वस्यः पिता च न अस्ति [१७९७]- हे इन्द्र ! तेरे सिवाय हमारा दूसरा कोई भाई नहीं है, और प्रशंसनीय पिता भी दूसरा कोई नहीं।

३९ अर्चतः विप्रस्य मनीषां बोध [१७९७]- अर्चना करनेवाले ब्राह्मणोंके मन तू जान।

४० अन्तमा सचा इमा दुवांसि कृष्व [१७९८] -मैं बहुत निकटका मित्र हूँ ऐसी भावनासे इन सेवाओंको स्वीकार कर।

४१ तुरस्य ते गिरः असुर्यस्य विद्वान् न अपि मृष्ये [१७९९]--शीघ्रतासे शत्रुओंका नाश करनेवाले तेरी स्तुतियोंको तेरे बलको जाननेवाला मैं दूर नहीं कर सकता। तेरी स्तुति मैं अवश्य करूंगा।

*

१५ अद्य ममार स ह्यः समान [१७८२]- आज जो मर गया वही कल प्रकट होता है। 'समान' (सं-आन) उत्तम रीतिसे प्राण धारण करता है।

१६ यत् चिकेत, तत् सत्यं इत्, मोघं न [१७८३] - इन्द्र जो कर्तव्य करनेका निश्चय करता है, उसे सत्य करके दिखाता है, उसे व्यर्थ नहीं जाने देता।

१७ स्पार्हं वसु जेता उत दाता [१७८३]- वह चाहने योग्य धनको जीतकर लाता है और उसका दान करता है।

१८ वृष्ण्या पौंस्यानि आ ददे [१७८४]- वह बल बढानेवाले पौरुषके काम करता है।

१९ ये देवाः मह्नः क्रियमाणस्य कर्मणः ऋते कर्म उदजायन्त [१७८४]- जो देव महत्वके करने योग्य कार्योंमें सत्य कर्म ही करके दिखाते हैं।

२० हे सूर्य ! महान् असि बद् [१७८८]- हे सूर्य! तू निश्चयसे महान् है।

२१ आदित्य ! महान् असि बद् [१७८८]- हे सूर्य ! तू महान् है, यह सत्य है।

२२ ते सतः महः महिमा [१७८८]- तेरे जैसे महान्-की महिमा भी महान् है।

२३ पनिष्टम ! मह्ना महान् असि [१७८८]- हे स्तुत्य ! तू अपनी महिमासे महान् है।

२४ हे सूर्य ! श्रवसा महान् असि बद् [१७८९] - हे सूर्य ! तू अपने महान् यशसे महान् है। यह सत्य है।

२५ देवानां मह्ना महान् असि [१७८९]- तू देवोंके महत्वके कारण बडा है।

२६ असुर्यः पुरोहितः [१७८९]- तू असुरोंका नाश करनेवाला है इसलिए तुझे आगे स्थापित किया है।

२७ ज्योतिः विभुः अदाभ्यं [१७८९]- तेरे तेज व्यापक और न दबनेवाले हैं।

२८ वृत्रहन्तमः शतक्रतुः इन्द्रः छिता विदे [१७९१]- वृत्रको मारनेवाला, सैकडों कर्म करनेवाला इन्द्र दोनों प्रकारके कार्य करता है। आर्योंका संरक्षण और दुष्टोंका नाश ये दोनों उसके काम हैं।

२९ वः महेवृधे महे प्रभरध्वम् [१७९३]- अपने महान् संवर्धनके लिए महान् वीरका विशेष सम्मान करो। उसे जो देना हो, भरपूर दो।

३० प्र चेतसे सुमतिं प्रकृणुध्वं [१७९३]- विशेष बुद्धिमान्के विषयमें अपने उत्तम विचार बना।

३१ चर्षणिप्राः विशः प्रवर [१७९३]- प्रजाओंका पोषण करनेवाला तू सब प्रजाओंका पोषण कर।

३२ हे विप्राः ! उरुव्यचसे महिने इन्द्राय सुवृक्तिं ब्रह्म जनयन्त, तस्य व्रतानि धीराः न मिनन्ति [१७९४] हे ब्राह्मणो ! विशेष व्यापक इन्द्रके लिए उत्तम स्तुतिके स्तोत्र कहो। उसके कार्य बुद्धिमान् लोग विनष्ट नहीं कर सकते।

३३ सम्रा राजानं अनुत्तमन्युं इन्द्रं एव वाणीः सहध्यै दधिरे [१७९५]- सबका एक ही समयमें राजा होनेवाले, जिसके क्रोधके आगे कोई ठहर नहीं सकता, ऐसे इन्द्रको ही हमारी वाणी शत्रुओंको हरानेके लिए आगे करती है।

३४ हर्यश्वाय आपीन् सं वर्धय [१७९५]- इन्द्रकी स्तुति करनेके लिए मित्रको प्रोत्साहन दो।

३५ हे इन्द्र ! यत् यावतः, एतावत् अहं ईशीय [१७९६]- हे इन्द्र ! जितने धनका तू स्वामी है, उतनेका ही मैं स्वामी होऊं।

३६ स्तोतारं इत् दधिषे, पापत्वाय न रंसिषम् [१७८६]- स्तोताको मैं धन देकर उसका धारण करूंगा, पर उसे पापमें प्रवृत्त नहीं होने दूंगा। पाप करनेमें वह आनन्द माने ऐसा उसे अवनत नहीं होने दूंगा।

३७ कुहचिद् विदे महयते दिवे दिवे रायः शिक्षेयं इत् [१७९७]- इन्द्र कहता है की कहीं पर भी रहकर महत्वके कार्य करनेवालेको मैं धन देता हूँ।

३८ हे मघवन् ! त्वत् अन्यत् आप्यं नहि, वस्यः पिता च न अस्ति [१७९७]- हे इन्द्र ! तेरे सिवाय हमारा दूसरा कोई भाई नहीं है, और प्रशंसनीय पिता भी दूसरा कोई नहीं।

३९ अर्चतः विप्रस्य मनीषां बोध [१७९७]- अर्चना करनेवाले ब्राह्मणोंके मन तू जान।

४० अन्तमा सचा इमा दुवांसि कृष्व [१७९८] -मैं बहुत निकटका मित्र हूँ ऐसी भावनासे इन सेवाओंको स्वीकार कर।

४१ तुरस्य ते गिरः असुर्यस्य विद्वान् न अपि मृष्ये [१७९९]--शीघ्रतासे शत्रुओंका नाश करनेवाले तेरी स्तुतियोंको तेरे बलको जाननेवाला मैं दूर नहीं कर सकता। तेरी स्तुति मैं अवश्य करूंगा।

*

: ते नाम सदा विवक्मि [१७९९]- नेवाले तेरे नामको मैं सदा लेता रहूंगा।

त्वां इत् भूरि हुवते [१८००]-बुद्धिमान् वन करता है।

आरे ज्योक् मा कः [१८००]- हमसे ा समय तक न रह।

न्द्राय पुरोरथं शूषं सु प्र अर्चत [१८०१] आगे रहनेवाले सामर्थ्यका अच्छी तरह

संगे अभीके चित् लोककृत् वृत्रहा ा बोधि [१८०१]- यदि युद्धमें शत्रुको ती हुई पास आ जावे, तो लोगोंका पालन वृत्रको मारनेवाला इन्द्र हमारा उत्साह ह तुम जानो।

ं धन्वसु अधि ज्याकाः नभन्तां [१८०१] धनुषकी डोरियां टूट जायें।

इन् अशत्रुः जज्ञिषे [१८०२]- अहिको हंत होता है।

ार्यं पुष्यसि [१८०२]- सब चाहने योग्य है।

रिष्वजामहे [१८०२]- उस तुझे हम

ाः अरातयः अर्यः सुविनशन्त [१८०३] पले आनेवाले सब शत्रु उत्तम रीतिसे नष्ट

जिघांसति शत्रवे वधं अस्ता असि हमारा वध करनेकी इच्छा करता है, उस अस्त्र फेंकता है।

ातिः वसु ददिः [१८०३]- तेरे वे ।

! रेवतः स्तोता रेवान् स्यात् [१८०४] खनेवाले इन्द्र ! तेरे समान धनवान्की धनवान् होगा ही।

मघोनः सुतस्य प्रेदुः [१८०४]- तेरे तुति करनेवाला अवश्य धनवान् होगा ही।

रायिः आ चिकेत [१८०५]- गाय न तू जानता है।

नः मा परा दाः [१८०६]- हिंसक हमें न कर।

५८ शार्धते मा [१८०६]- नाश करनेवालोंके अधीन हमें मत कर।

५९ हे शचीवः । शचीभिः शिक्ष [१८०६] हे शक्तिमान् इन्द्र ! अपनी शक्तिसे हमें धन दे।

६० सः विक्रमता ओजसा पुरुचित् दीधानः दुहन्तरः भवति [१८१५] वह अपने तेजस्वी बलसे अत्यन्त तेजस्वी होकर शत्रुका नाश करनेवाला होता है।

६१ यस्य समृतौ वीडु चित् श्रुवत् [१८१५]- जिसके साथ रहनेसे बलवान् शत्रु भी हार जाता है।

६२ धन्वासहा न अयते [१८१५]- धनुषधारी वीर अपनी जगहसे नहीं हटता।

६३ निःषहमाणः यमते [१८१५]- शत्रुको हरानेवाला सबका नियमन करता है।

६४ तव वयः अवः[१८१६]- तेरा अन्न प्रशंसनीय है।

६५ हे विभावसो ! अर्चयः महि आजग्मते [१८१६] -हे तेजस्वी अग्ने ! तेरी ज्वालायें बहुत प्रदीप्त हो चुकी हैं।

६६ पावकवर्चाः, शुक्रवर्चाः, अनूनवर्चाः भानुना उदियर्षि [१८१७]- शुद्ध करनेवाली किरणोंसे युक्त, निर्मल तेजसे युक्त, पूर्ण तेजस्वी ऐसा तू अपने तेजसे उदयको प्राप्त होता है।

६७ हे अमर्त्य अग्ने ! जन्तुभिः इरज्यन् अस्मे रायः प्रथयस्व [१८१९]- हे अमर अग्ने ! अपने तेजसे तेजस्वी हुआ हुआ तू हमारे धन बढा।

६८ दर्शतस्य वपुषः विराजसि [१८१९]- तू सुन्दर शरीरसे सुशोभित होता है।

६९ दर्शतं क्रतुं पृणक्षि [१८१९]- दर्शनीय सुन्दर यज्ञकर्मको उत्तम फल देता है।

७० अध्वरस्य इष्कर्त्तारं प्रचेतसं, महः राधसः क्षयन्तं, वामस्य रातिं सुभगां महीं इषं, सानसिं रयिं दधासि [१८२०]- अहिंसापूर्ण यज्ञके संस्कार करनेवाले, विशेष ज्ञानी, बहुत धन पासमें रखनेवाले और उत्तम धन देनेवाले तेरी मैं स्तुति करता हूं। तू उत्तम भाग्य युक्त बहुत अन्न और सेवनीय धन हमें देता है।

७१ जनाः ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतं अग्निं सुम्माय पुरः दधिरे [१८२१]-- याजक यज्ञ करनेवाले पूज्य, सब प्रकारसे दर्शनीय अग्निको सुख हो, इसलिए अपने आगे स्थापित करते हैं।

७२ त्वं यस्य सख्यं आविथ, सः सुवीराभिः वाज-

कर्मभिः सव ऊतिभिः प्र तराति [१८२२]- तू जिसके साथ मित्रता करता है, वह वीर पुत्रोंसे और बलवर्धक कर्मोंसे युक्त होता है और तेरे संरक्षणोंसे युक्त होकर संकटोंसे पार हो जाता है।

७३ शुक्रः दिवि विराजति, महिषीव विजायते [१८२५]- अग्नि प्रदीप्त होकर आकाशमें प्रकाशित होता है, रानीके समान वह सुशोभित होता है।

७४ यो जागार तं ऋचः कामयन्ते [१८२६]-जो जागता है, उसकी इच्छा ऋचायें करती हैं।

७५ यो जागार तं उ सामानि यन्ति [१८२६]- जो जागता रहता है उसे साम प्राप्त होता है।

७६ यः जागार तं अयं सोमः आह, तव सख्ये अहं अस्मि [१८२६]- जो जागृत रहता है, उससे यह सोम कहता है कि मैं तेरा मित्र होकर रहता हूँ।

७७ अहं न्योकाः अस्मि [१८२६]- मैं घर बनाकर नहीं रहता।

७८ पूर्वसद्भ्यः सखिभ्यः नमः [१८२८]- पहलेसे यज्ञमें बैठनेवाले मित्रोंको मैं नमस्कार करता हूँ।

७९ साकंनिषेभ्यः नमः [१८२८]- पास पास बैठनेवालोंको नमस्कार करता हूँ।

८० विश्वा रूपाणि ओकांसि देवाः चक्रिरे [१८३०] - अनेक रूपोंके घर देवोंने बनाये हैं।

८१ हे अग्ने ! ऊर्जा इषा आयुषा पुनः निवर्तस्व [१८३२]- तू बल, अन्न और आयुके साथ हमारे पास आ।

८२ अंहसः नः पुनः पाहि [१८३२] - पापसे हमारी बार बार रक्षा कर।

८३ अग्ने ! रय्या सह निवर्त्तस्व [१८३३]- हे अग्ने ! धनके साथ तू हमारे पास आ।

८४ हे इन्द्र ! यथा त्वं वस्वः एकः इत्, यत् अहं ईशीय, मे स्तोता गोसखा स्यात् [१८३४]- हे इन्द्र ! जैसा तू अकेला ही धनका स्वामी है, वैसा ही मैं धनका स्वामी यदि हो जाऊं, तो मेरी स्तुति करनेवाला गायोंका मित्र हो।

८५ आपः मयोभुवः स्थ, ताः नः ऊर्जे दधातन, महे रणाय चक्षसे [१८३७]- जल निस्सन्देह सुख देनेवाले हैं, वे हमारे बल बढानेवाले हों, वे महान् और सुन्दर ज्ञानको देनेवाले हों।

८६ इह वः यः शिवतमः रसः, तस्य नः भाजयत [१८३८]- हे जलो ! यहां जो तुम्हारा अत्यन्त सुख देनेवाला रस है, उसे हमें सेवन करनेके लिए दो।

८७ हे आपः ! यस्य क्षयाय जिन्वथ, तस्मै अरं गमाम [१८३९]- हे जलो ! जिसका यहां निवास हो, ऐसी इच्छा करते हो, उसके लिए हम पूर्ण रूपसे उपयोगी हों, ऐसा तुम करो।

८८ वातः नः हृदे शंभु मयोभु भेषजं आ वातु, नः आयूंषि प्रतारिषत् [१८४०]- वायु हमारी तरफ हृदयको आनन्द देनेवाले और सुखकारक औषध लेकर आवे, और हमारी आयु बढावे।

८९ हे वात ! नः पिता, भ्राता, सखा असि, सः नः जीवातवे कृधि [१८४१]- हे वायो ! तू हमारा पिता, भाई और मित्र है, वह तू हमारी आयु दीर्घ कर।

९० हे वात ! ते गृहे गुहा अमृतं निहितं, हे विभावसो ! तस्य नः धेहि [१८४२]- हे वायो ! तेरे घरमें गुप्त स्थान पर अमृत रखा हुआ है। हे धन पासमें रखनेवाले वायो ! वे धन हमें दे।

उपमा

१ समुद्रं वर्ध [१७६७]- समुद्रके समान पात्रोंको भर दे।

२ संयतः न [१७६९]- संयमी पुरुषके समान (गिरः यन्तिः) स्तुतियां तुझे प्राप्त होती हैं।

३ यथा पथा स्रुतयः [१७७०]- जैसे बडे रास्तेसे अनेक छोटे रास्ते फूटते हैं, (त्वत् रातयः वियन्तु) उसीप्रकार तुझसे अनेक दान निकलते हैं।

४ यः अर्वा नभन्यः न [१७७४]- जो [अग्नि] गतिमान् वायुके समान वेगवाला होता है।

५ अश्वं न [१७७७]- जिसप्रकार घोडा मनुष्यको यथास्थान पहुंचाता है, उसीप्रकार वह अग्नि (भद्रं क्रतुं) कल्याण करनेवाले यज्ञको बढाता है।

६ होता इव [१७८७]- जिसप्रकार होता स्तुति करता है, उसीप्रकार (प्रातः मत्सति) वह प्रातःकाल सोमपानकी इच्छा करता है।

न [१८०८]- भेडको जिसप्रकार भेडिया
कार (एषां नेमिः विधूनुते) ये पत्थरोंको
कूटते हुए कंपाती हैं।
[१८१२]- जिसप्रकार रथोंको तैय्यार
र (असृग्रन्) अन्न तैय्यार करते हैं।
ातिवेदसं [१८१३]- विप्रके समान
न तेजस्वी होता है।
परिज्मानं [१८१४]- सूर्यके समान

११ द्रुहन्तरः परशुः न [१८१५]- लकडीको काटने-
वाले फरसेके समान वह अग्नि (द्रुहन्तरः भवाति) शत्रुओंको
काटनेवाला होता है।

१२ महिषी इव विजायते [१८२५]- रानीके समान
वह अग्नि सुशोभित होता है।

१३ स्वः न [१८४७]- सूर्यके समान (वृषो सुरभिं
अत्कं वसानः) दीखनेमें सुन्दर लगनेवाले रूपको धारण
करता है।

विंशाध्यायान्तर्गत ऋषि-देवता-छन्द सूची

ऋग्वेदस्थानं	ऋषिः	देवता	छन्दः
	(१)		
९।१९।१	नृमेध आंगिरसः	पवमानः सोमः	गायत्री
९।१९।२	नृमेध आंगिरसः	,,	,,
९।१९।३	नृमेध आंगिरसः	,,	,,
—	नृमेधः वामदेवो वा	इन्द्रः	द्विपदा पंक्तिः
—	नृमेधः वामदेवो वा	,,	,,
—	नृमेधः वामदेवो वा	,,	,,
८।६८।१	प्रियमेधः आंगिरसः	,,	अनुष्टुप्
८।६८।२	प्रियमेधः आंगिरसः	,,	गायत्री
८।६८।३	प्रियमेधः आंगिरसः	,,	,,
१।१४९।३	दीर्घतमा औचथ्यः	अग्निः	विराट्
१।१४९।४	दीर्घतमा औचथ्यः	,,	,,
१।१४९।५	दीर्घतमाः औचथ्यः	,,	,,
४।१०।१	वामदेवः गौतमः	,,	पदपंक्तिः
४।१०।२	वामदेवो गौतमः	,,	,,
४।१०।३	वामदेवो गौतमः	,,	,,
	(२)		
१।४४।१	प्रस्कण्वः काण्वः	,,	प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)
१।४४।२	प्रस्कण्वः काण्वः	,,	,,
१०।५५।५	बृहदुक्थो वामदेव्यः	इन्द्रः	त्रिष्टुप्
१०।५५।६	बृहदुक्थो वामदेव्यः	,,	,,
१०।५५।७	बृहदुक्थो वामदेव्यः	,,	,,

मंत्रसंख्या	ऋग्वेदस्थानं	ऋषिः	देवता	छन्दः
१७८५	८।९४।४	बिन्दुः पूतदक्षो वा आंगिरसः	मरुतः	गायत्री
१७८६	८।९४।५	बिन्दुः पूतदक्षो वा आंगिरसः	,,	,,
१७८७	८।९४।६	बिन्दुः पूतदक्षो वा आंगिरसः	,,	,,
१७८८	८।१०१।११	जमदग्निर्भार्गवः	सूर्यः	प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)
१७८९	८।१०१।१२	जमदग्निर्भार्गवः	,,	,,

(३)

१७९०	८।९३।३१	सुकक्ष आंगिरसः	इन्द्रः	गायत्री
१७९१	८।९३।३२	सुकक्ष आंगिरसः	,,	,,
१७९२	८।९३।३३	सुकक्ष आंगिरसः	,,	,,
१७९३	७।३१।१०	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	,,	विराट्
१७९४	७।३१।११	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	,,	,,
१७९५	७।३१।१२	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	,,	,,
१७९६	७।३२।१८	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	,,	प्रगाथः=(विषमा बृहती, समा सतोबृहती,)
१७९७	७।३२।१९	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	,,	,,
१७९८	७।२२।४	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	,,	विराट्
१७९९	७।२२।५	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	,,	,,
१८००	७।२२।६	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	,,	,,

(४)

१८०१	१०।१३३।१	सुदासः पैजवनः	,,	शाक्वरी
१८०२	१०।१३३।२	सुदासः पैजवनः	,,	,,
१८०३	१०।१३३।३	सुदासः पैजवनः	,,	,,
१८०४	८।२।१३	मेधातिथिः काण्वः	,,	गायत्री
१८०५	८।२।१४	मेधातिथिः काण्वः	,,	,,
१८०६	८।२।१५	मेधातिथिः काण्वः	,,	,,
१८०७	८।३४।१	नीपातिथिः काण्वः	,,	,,
१८०८	८।३४।२	नीपातिथिः काण्वः	,,	,,
१८०९	८।३४।३	नीपातिथिः काण्वः	,,	,,
१८१०	९।६७।१६	जमदग्निर्भार्गवः	पवमानः सोमः	,,
१८११	९।६७।१८	जमदग्निर्भार्गवः	,,	,,
१८१२	९।६७।१७	जमदग्निर्भार्गवः	,,	,,

(५)

१८१३	१।१२७।१	परुच्छेपो दैवोदासिः	अग्निः	अत्यष्टिः
१८१४	१।१२७।२	परुच्छेपो दैवोदासिः	,,	,,
१८१५	१।१२७।३	परुच्छेपो दैवोदासिः	,,	,,
१८१६	१०।१४०।१	अग्निः पावकः	अग्निः	विष्टारपंक्तिः
१८१७	१०।१४०।२	अग्निः पावकः	,,	,,

ऋग्वेदस्थानं	ऋषिः	देवता	छन्दः
१०।१४०।३	अग्निः पावकः	अग्निः	सतोबृहती
१०।१४०।४	अग्निः पावकः	,,	,,
१०।१४०।५	अग्निः पावकः	,,	,,
१०।१४०।६	अग्निः पावकः	,,	उपरिष्टाज्ज्योतिः
	(६)		
८।१९।३०	सोभरिः काण्वः	,,	ककुभः प्रगाथः- (विषमा ककुप्, समा सतोबृहती
८।१९।३१	सोभरिः काण्वः	,,	,,
१०।९१।६	अरुणो वैतहव्यः	,,	जगती
—	अग्निः प्रजापतिः	,,	गायत्री
५।४४।१४	अवत्सारः काश्यपः	विश्वे देवाः	त्रिष्टुप्
५।४४।१५	अवत्सारः काश्यपः	,,	,,
—	मृगः	अग्निः	गायत्री
—	मृगः	,,	,,
—	मृगः	,,	,,
—	अवत्सारः काश्यपः	,,	,,
—	अवत्सारः काश्यपः	,,	,,
—	अवत्सारः काश्यपः	,,	,,
	(७)		
८।१४।१	गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ	इन्द्रः	,,
८।१४।२	गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ	,,	,,
८।१४।३	गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ	,,	,,
१०।९।१	त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः, सिन्धुद्वीपो आम्बरीषो वा	आपः	,,
१०।९।२	त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः, सिन्धुद्वीपो आम्बरीषो वा	,,	,,
१०।९।३	त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः, सिन्धुद्वीपो आम्बरीषो वा	,,	,,
१०।१८६।१	उलो वातायनः	वायुः	,,
१०।१८६।२	उलो वातायनः	,,	,,
१०।१८६।३	उलो वातायनः	,,	,,
—	सुपर्णः	अग्निः	त्रिष्टुप्
—	सुपर्णः	,,	,,
—	सुपर्णः	,,	,,
१०।१२३।६	वेनो भार्गवः	वेनः	,,
१०।१२३।७	वेनो भार्गवः	,,	,,
१०।१२३।८	वेनो भार्गवः	,,	,,

अथैकविंशोऽध्यायः ।

अथ नवमप्रपाठके तृतीयोऽर्धः ॥ ९-३ ॥

(१-९) १-४, ५ (१-२) अप्रतिरथ ऐन्द्रः; ५ (३), ६ (३), ८ (१, ३) पायुर्भारद्वाजः; ७ (१-२) शासो भारद्वाजः; ९ (१) जय ऐन्द्रः; ९ (२-३) गोतमो राहूगणः; ४ (३) ६ (१-२)-? ७ (३)...८ (२)... ॥ १, २ (२-३), ३-४, ५ (२), ६, ७, ९ (१) इन्द्रः; ५ (२) इन्द्रो मरुतो वा; २ (१) बृहस्पतिः; ५ (१) अम्बा देवी, ५ (३) इषवः; ६ (३) (संग्रामाशिषः) युद्धभूमि - कवच - ब्रह्मणस्पत्यावितयः; ८ (१, ३ [संग्रामाशिषः १ वर्म - सोम - वरुणाः, ३ देवब्रह्माणि]; ९ सोमावरुणौ । (२-३) विश्वे देवाः; ८ (३)... ॥ ३ ॥ १-४, ५ (१), ६ (१) ८ (१) ९ (१-२) त्रिष्टुप्; ५ (२ ३), ६ (२) ७ (१-२), ८ (२) अनुष्टुप्; ६ (३) पंक्तिः; ९ (३) विराट्स्थाना; ७ (३) विराड् जगती ८ (३)... ॥

१८४९ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१०३।१)

१८५० सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥ २ ॥ (ऋ. १०।१०३।२)

१८५१ स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सꣳस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन ।
सꣳसृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥ १ (फे) ॥
[धा० ४० । उ० २। स्व० ७] (ऋ. १०।१०३।३)

[१८४९] (आशुः भीमः) शीघ्रता करनेवाला और भयंकर (वृषभः न शिशानः) बैलके समान शत्रुको मारनेवाला (घनाघनः) शत्रुका नाश करनेवाला (चर्षणीनां क्षोभणः) द्वेष करनेवाले दुष्टोंमें क्षोभ उत्पन्न करनेवाला (संक्रन्दनः अनिमिषः) शत्रुओंको रुलानेवाला और आलस्य न करनेवाला (एकवीरः इन्द्रः) ऐसा अद्वितीय वीर इन्द्र (शतं सेनाः साकं अजयत्) सैंकडों शत्रुओंकी सेनाको एक ही साथ जीतकर हराता है ॥ १ ॥

[१८५०] (युधः नरः) हे युद्ध करनेवाले नेताओ ! (सं क्रन्दनेन) शत्रुओंको रुलानेवाले (अ-निमिषेण) आलस्य न करनेवाले (जिष्णुना) जय प्राप्त करनेवाले (युत्कारेण) युद्ध करनेमें निपुण (दुश्च्यवनेन) अपने स्थान पर स्थिर रहनेवाले (धृष्णुना) शत्रुओंको पराजित करनेवाले (इषु-हस्तेन वृष्णा इन्द्रेण) बाण हाथमें धारण करनेवाले बलवान् इन्द्रकी सहायतासे (तत् जयत) वह युद्ध जीतो; और (तत् सहध्वं) उसमें शत्रुको हराओ ॥ २ ॥

[१८५१] (सः इषुहस्तैः वशी) वह इन्द्र बाण हाथोंमें धारण करनेवाले योधाओंकी सहायतासे सब शत्रुओं पर अपना अधिकार रखता है, (सः निषङ्गिभिः) वह तलवारधारी योधाओंकी सहायतासे सब शत्रुओंको वशमें करता है । (सः इन्द्रः) वह इन्द्र (युधः) युद्ध करनेमें प्रवीण (गणेन संस्रष्टा) शत्रु समुदायके साथ युद्ध करता है । (संसृष्टजित्) युद्ध जीतनेवाला (सोमपाः) सोम पीनेवाला, (बाहु-शर्धी) बाहुबलसे युक्त (उग्र-धन्वा) धनुष चलानेमें कुशल (प्रहिताभिः अस्ता) छोडे हुए बाणोंसे शत्रुओंको मारनेवाला है ॥ ३ ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ते पारि दीया रथेन रक्षोहामित्रा॑ अपबाधमानः ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
न्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१०३।४)

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
ज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥ २ ॥ (ऋ. १०।१०३।५)

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मेदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं॑ सखायो अनु सं॑ रभध्वम् ॥ ३ ॥ २ (हे) ॥
[धा० ३६ । उ० नास्ति । स्व० ७] (ऋ. १०।१०३।६)

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।
१ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
वनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकं॑ सेना अवतु प्र युत्सु ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१०३।७)

३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
१ २ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २
नानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ २ ॥ (ऋ १०।१०३।८)

हे (बृहस्पते) बहुतोंका पालन करनेवाले इन्द्र ! (रथेन परिद्रीय) रथसे यहां आ। (रक्षो-हा) ला और (अमित्रान् अपबाधमानः) शत्रुओंको बाधा पहुंचानेवाला (सेनाः प्रभंजन् प्रमृण) प्रभिन्न करके उनका नाश कर। (युधा जयत्) युद्धमें जय प्राप्त कर, (अस्माकं रथानां अविता ांका रक्षक होकर तू बढ ॥ १ ॥

] हे (इन्द्र) इन्द्र ! (बल-विज्ञायः) सबके बल जाननेवाला (स्थविरः) बडा (प्र-वीरः सह- रता दिखानेवाला, शत्रु को हरानेमें समर्थ (वाजी सहमानः) बलवान् और साहस दिखानेवाला :) उग्र, महावीर (अभि सत्वा सहोजाः) बलवान् और बलके साथ उत्पन्न हुआ हुआ (गोवित्) नेवाला तू (जैत्रं रथं आ तिष्ठ) विजयी रथ पर बैठ ॥ २ ॥

] हे (सजाताः) एक स्थानमें रहनेवाले योद्धाओ ! (गोत्रभिदं) शत्रुके किलोंको तोडनेवाले (गो ोंवाले (वज्रबाहुं) वज्रके समान मजबूत भुजाओंवाले (अज्म जयन्तं) युद्ध जीतनेवाले (ओजसा शत्रुका नाश करनेवाले (इमं) इस इन्द्रको आगे करके (अनुवीरयध्वं) उसके अनुकूल रहकर बीरता ज्ञायः) मित्रो ! (अनु संरभध्वम्) इस इन्द्रके अनुकूल रहकर शत्रु पर क्रोध करो ॥ ३ ॥

] (गोत्राणि सहसा अभि-गाहमानः) शत्रुके किलोंमें अपनी शक्तिसे प्रवेश करनेवाला (अ-दयः या न दिखानेवाला वीर (शत-मन्युः) बहुत शत्रुओं पर क्रोध करनेवाला (दुश्च्यवनः) जो अपने हीं जा सकता (पृतना-षाट्) शत्रुकी सेनाको हरानेवाला, (अयुध्यः इन्द्रः) जिसके साथ कोई भी सकता, ऐसा इन्द्र (युत्सु) युद्धमें (अस्माकं सेनाः प्र अवतु) हमारी सेनाका संरक्षण करे ॥ १ ॥

] (आसां नेता इन्द्रः) हमारी इन सेनाओंका नेता इन्द्र है। (बृहस्पतिः पुरः एतु) बृहस्पति (दक्षिणा यज्ञः सोमः) चतुरतासे युद्धरूप यज्ञ चलानेवाला सोम भी आगे जावे, (मरुतः) मरुतवीर) शत्रुओंको मारनेवाले (जयन्तीनां देवसेनानां) विजयी देवोंकी सेनाके आगे चले ॥ २ ॥

१८५७ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम् ।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥ ३ ॥ ३ ॥ (च) ॥
[धा० २७ । उ १ । स्व० १] (ऋ. १०।१०३।९)

१८५८ उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मनांसि ।
उद्वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१०३।१०)

१८५९ अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मां उ देवा अवता हवेषु ॥ २ ॥ (ऋ १०।१०३।११)

१८६० असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा स्पर्धमाना ।
तां गूहत तमसापव्रतेन यथैतेषामन्यो अन्यं न जानात् ॥ ३ ॥ ४ (चु) ॥
[धा ३२ । उ० १ । स्व० ५] (अथर्व ३।२।६)

१८६१ अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१०३।१२)

[१८५७] (वृष्णः इन्द्रस्य) बलवान् इन्द्रके (राज्ञः वरुणस्य) राजा वरुणके (आदित्यानां मरुतां) आदित्योंके और मरुतोंके (उग्रं शर्धः) उग्र बल हमारे सहायक हों। (महामनसां) विशाल हृदयवाले (भुवनच्यवानां) शत्रुके लोगोंको हिला देनेवाले (जयतां देवानां घोषः) विजयी देवोंकी जयजयकार (उदस्थात्) सुनाई देती है ॥ ३ ॥

[१८५८] हे (मघवन्) धनवान् इन्द्र ! हमारे (आयुधानि उद् हर्षय) शस्त्रधारी वीरोंका उत्साह बढा, (मामकानां सत्वनां मनांसि उत्) हमारे बलवान् सैनिकोंका मन उत्साहित कर। हे (वृत्रहन्) शत्रुको मारनेवाले इन्द्र ! (वाजिनां वाजिनानि उत्) हमारे घोडोंकी गति बढा, तथा (जयतां रथानां घोषाः उत् यन्तु) विजयी होकर आनेवाले हमारे रथोंके शब्द सुनाई देवें ॥ १ ॥

[१८५९] (अस्माकं समृतेषु ध्वजेषु) हमारे वज्रधारी सैनिकोंका रक्षण (इन्द्रः) इन्द्र करे। (अस्माकं याः इषवः जयन्तु) हमारे जो बाण हैं, वे विजयी हों। (अस्माकं वीराः उत्तरे भवन्तु) हमारे वीर श्रेष्ठ हों। हे (देवाः) देवो ! (अस्मान् उ हवेषु अवत) युद्धमें हमारी रक्षा करो ॥ २ ॥

[१८६०] हे (मरुतः) मरुतो ! (या असौ) जो यह (ओजसा स्पर्धमाना) अपने सामर्थ्यसे हमारे साथ-मुकाबला करती हुई परेषां सेना नः अभ्येति) शत्रुकी सेना हम पर आक्रमण करती हुई आती है। (तां अपव्रतेन तमसा गूहत) उस सेनाको, जिसमें कुछ भी काम नहीं किया जा सकता ऐसे, गहरे अन्धकारसे ढक दे, (यथा एतेषां अन्यः अन्यं न जानात्) जिससे कि शत्रु सेनाके लोग शत्रु-मित्रको न पहचान सकें और आपसमें ही कट मरें ॥ ३ ॥

[१८६१] हे (अप्वे) पापके देवते ! (परा इहि) तू मुझसे दूर हो जा, (अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती) इन शत्रुओंके चित्तको मोहित कर और (अंगानि गृहाण) उनके अंगोंको जकड दे। (अभि प्र इहि) उन शत्रुओं पर आक्रमण कर। (हृत्सु शोकैः निर्दह) उनके हृदयोंको शोकसे जला दे। (अमित्राः अन्धेन तमसा सचन्तां) हमारे शत्रु गहरे अन्धकारके कारण व्याकुल हो जावें ॥ १ ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१८६२ प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥ २ ॥ (ऋ. १०।१०३।१३)

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१८६३ अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
गच्छामित्रान्प्र पद्यस्व मामीषां कं च नोच्छिषः ॥ ३ ॥ ५ (ठा) ॥
[धा० १८ । उ० २ । स्व० २] (ऋ. ६।७५।१६)

३ १ २ ३ १ २र १ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१८६४ कङ्काः सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् गृध्राणामन्नमसावस्तु सेना ।
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मैषां मोच्यघहारश्च नेन्द्र त्वयाऽस्येनाननुसंयन्तु सर्वान् ॥ १ ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१८६५ अमित्रसेनां मघवन्नस्मां छत्रुयतीमभि । उभौ तामिन्द्र वृत्रहन्नग्निश्च दहतं प्रति ॥ २ ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१८६६ यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
तत्र नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ ३ ॥ ६ (आ) ॥
[धा० २७ । उ० नास्ति । स्व० २] ऋ. ६।७५।१७)

२र ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
१८६७ वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१५२।३)

[१८६२] हे (नरः) वीरो ! (प्र इत, जयत) शत्रु पर चढाई करो और विजय प्राप्त करो । (इन्द्रः वः शर्म यच्छतु) इन्द्र तुम्हें सुख देवे । (वः बाहवः उग्राः सन्तु) तुम्हारी भुजाएं वीरता युक्त हों । (यथा अनाधृष्याः आसथ) जिसके कारण तुम पर शत्रु आक्रमण न कर सकें ॥ २ ॥

[१८६३] हे (ब्रह्मसंशिते शरव्ये) ज्ञानसे प्रेरित किये गए बाण ! (अवसृष्टा परा पत) छोडे जानेके बाद तू दूर जाकर गिर और (अमित्रान्) शत्रु पर (प्र पद्यस्व) जाकर गिर । (अमीषां कंचन मा उच्छिषः) उनमेंसे कोई भी जीवित न रहे ॥ ३ ॥

[१८६४] (सुपर्णाः कंकाः) उत्तम पंखवाले मांस भक्षक पक्षी [बाण] (एनान् अनु यन्तु) इन शत्रुओंका पीछा करें । (असौ सेना) वह शत्रुकी सेना (गृध्राणां अन्नं अस्तु) गिद्धोंका अन्न बने । (एषां मा अमोचि) इनमेंसे कोई भी न बचे । हे (इन्द्र) इन्द्र ! (अघहारः च न) जो अधिक पापी न हो वह शत्रु भी न छूटे । (श्येनासि एनान् सर्वान् अनु संयन्तु) मांसभक्षक पक्षी इन सबका पीछा करें ॥ १ ॥

[१८६५] हे (मघवन् वृत्रहन् इन्द्र) धनवान् और शत्रुके वध करनेवाले इन्द्र ! तू (अग्निः च) और अग्नि (उभौ) दोनों (अस्मान् तां अभि शत्रुयतीं) हमसे शत्रुता करनेवाले (अमित्रसेनां प्रति दहतं) शत्रुकी सेनाको जला डालो ॥ २ ॥

[१८६६] (यत्र) जिस संग्राममें (विशिखाः कुमाराः इव) शिखारहित लडकोंके समान (बाणाः संपतन्ति) बाण गिरते हैं, (तत्र नः) वहां हमें (ब्रह्मणस्पतिः अदितिः) ब्रह्मणस्पति और अदिति (शर्म यच्छतु) सुख देवें । (विश्वाहा शर्म यच्छतु) हमेशा सुख देवें ॥ ३ ॥

[१८६७] हे (इन्द्र) इन्द्र ! (रक्षः विजहि) राक्षसोंका नाश कर, (मृधः विजहि) हिंसक शत्रुओंका नाश कर । (वृत्रस्य हनू रुज) वृत्रकी ठोढी तोड दे । हे (वृत्रहन्) शत्रुका नाश करनेवाले इन्द्र ! (अभिदासतः अमित्रस्य मन्युं) हमारी हानि करनेवाले शत्रुके क्रोधको समाप्त कर ॥ १ ॥

१८६८ वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
यो अस्माँ२ अभिदासत्यधरं गमया तमः ॥ २ ॥ (ऋ. १०।१५२।४)

१८६९ इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानावनाधृष्यौ सुप्रतीकावसह्यौ ।
तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते याभ्यां जितमसुराणाँ२ सहो महत् ॥ ३ ॥ ७ (थि) ॥
[धा० २९ । उ० २ । स्व० ३]

१८७०. मर्माणि ते वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥ १ ॥ (ऋ. ६।७५।१८)

१८७१ अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणोऽहय इव ।
तेषां वो अग्निनुष्मानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम् ॥ २ ॥ (अथर्व. ६।६७।२)

१८७२ यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ट्यो जिघाँसति ।
देवास्तँ सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरँ शर्म वर्म ममान्तरम् ॥ ३ ॥ ८ (वी) ॥
[धा० २९ । उ० नास्ति । स्व० ४] (ऋ. ६।७५।१९)

[१८६८] हे (इन्द्र) इन्द्र ! (नः मृधः विजहि) हमारे शत्रुओंका नाश कर, (पृतन्यतः नीचा यच्छ) हम पर सेना भेजनेवाले शत्रुओंको नीचे गिरा । (यः अस्मान् अभिदासति) जो हमें दास बनानेकी इच्छा करता है, उसे (अधरं तमः गमय) गहरे अन्धेरेमें डाल दे ॥ २ ॥

[१८६९] (याभ्यां असुराणां महत् सहः जितं) जिनके द्वारा असुरोंके महान् बलको जीता, (तौ इन्द्रस्य) वे इन्द्रके (स्थविरौ युवानौ) बडे और तरुण (अनाधृष्यौ सु प्रतीकौ) जिनपर किसीका आक्रमण नहीं हो सकता, ऐसे हाथीकी सूंडके समान (असह्यौ बाहू) न सहने योग्य भुजायें (योगे आगते) युद्धके समयमें (प्रथमौ युंजीत) सबसे पहले उपयोगमें आती हैं ॥ ३ ॥

[१८७०] हे राजन् ! (ते मर्माणि) तेरे मर्मस्थानोंको (वर्मणा छादयामि) कवचसे ढक देता हूँ । उसके बाद (सोमः राजा त्वा) सोम राजा तुझे (अमृतेन अनु वस्तां) अमृतसे ढक देवे । (वरुणः ते उरोः वरीयः कृणोतु) वरुण तुझे अधिक सुख देवे । (देवाः जयन्तं त्वा अनु मदन्तु) सब देव विजय प्राप्त करनेवाले तुझे आनन्दित करें ॥ १ ॥

[१८७१] (अमित्राः) शत्रु (अशीर्षाणः अहयः इव) कटे हुए सिरवाले सांपोंके समान (अन्धाः भवत) अन्धे हो जाएं । (तेषां अग्निनुष्मानां वः) अग्निसे जलनेसे बचे हुए तुम शत्रुओं में से (वरं वरं इन्द्रः हन्तु) श्रेष्ठ श्रेष्ठ शत्रुको इन्द्र मारे ॥ २ ॥

[१८७२] (यः नः अरणः) जो अपना होते हुए भी शत्रुता करता है, (यः च निष्ट्यः) जो गुप्त रहकर (नः जिघांसति) हमें मारना चाहता है, (तं सर्वे देवाः धूर्वन्तु) उसे सब देव नष्ट करें । (ब्रह्म मम अन्तरं वर्म) ज्ञान मेरे अन्तरका कवच है । (शर्म वर्म मम अन्तरं अस्तु) कल्याण भी मेरा आन्तरिक कवच हो ॥ ३ ॥

१८७३ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः ।
सृकꣳ सꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रूꣳ ताढि विमृधो नुदस्व ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१८०।२)

१८७४ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ २ ॥ (ऋ. १।८९।८)

१८७५ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ३ ॥ ९ (कृ) ॥
[धा० २६ । उ० १ । ख० ६] (ऋ. १।८९।६)

॥ इति नवमप्रपाठके तृतीयोऽर्धः ॥ ९-३ ॥ नवमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥ ९ ॥

॥ इत्येकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

॥ इत्युत्तरार्चिकः समाप्तः ॥

॥ इति सामवेदसंहिता समाप्ता ॥

[१८७३] हे (इन्द्र) इन्द्र ! तू (कुचरः गिरिष्ठाः मृगः न भीमः) पर्वतपर रहनेवाले हिंसक सिंहके समान भयंकर है । (परस्याः परावतः आ जगन्थ) बहुत दूरके स्थानसे भी तू यहां आ (सृकं तिग्मं पविं संशाय) दूर पहुंचनेवाले तीक्ष्ण वज्रको और अधिक तीक्ष्ण करके (शत्रून् वि ताढि) शत्रुओंको नष्ट कर । (वि मृधः नुदस्व) संग्राम करनेवाले शत्रुओंको दूर कर ॥ १ ॥

[१८७४] हे (देवाः) देवो । (कर्णेभिः भद्रं शृणुयाम) कानोंसे हम कल्याण करनेवाली बातें सुनें । हे (यजत्राः) याजको ! (अक्षभिः भद्रं पश्येम) आंखोंसे हितकारी दृश्य ही देखें, (स्थिरैः अंगैः तनूभिः) मजबूत अवयवोंवाले शरीरसे (तुष्टुवांसः) तुम्हारी स्तुति करते हुए (यत् देवहितं आयुः) देवोंके द्वारा नियत की गई आयुको (व्यशेमहि) हम प्राप्त करके अन्त तक हम कार्य करते रहें ॥ २ ॥

[१८७५] (वृद्धश्रवाः इन्द्रः नः स्वस्ति) बहुत प्रशंसित इन्द्र हमारा कल्याण करनेवाला हो, (विश्ववेदाः पूषा नः स्वस्ति) सर्वज्ञ पूषा हमारा कल्याण करनेवाला हो. (अरिष्टनेमिः तार्क्ष्यः नः स्वस्ति) अहिंसित शस्त्रोंको पासमें रखनेवाला सुपर्ण हमारा हित करनेवाला हो । (बृहस्पतिः नः स्वस्ति विद्धातु) ज्ञानका स्वामी हमारा कल्याण करे ॥ ३ ॥

॥ इति एकविंशोऽध्यायः ॥

एकविंश अध्याय

सुभाषित

१ आशुः भीमः वृषभः न शिशानः घनाघनः क्षर्ष-णिनां क्षोभणः, संक्रन्दनः अनिमिषः एकवीरः इन्द्रः शतं सेनाः साकं अजयत् [१८४९]- शीघ्र कार्य करनेवाला, भयंकर शूर, बैलके समान शत्रुको मारनेवाला, शत्रुका समूल नाश करनेवाला, द्वेष करनेवाले दुष्टोंमें क्षोभ उत्पन्न करनेवाला, शत्रुओंको रुलानेवाला, आलस्य न करने-वाला अद्वितीय वीर इन्द्र सैकडों शत्रुओंकी सेनाओंको जीतकर हराता है।

२ हे युधः नरः ! संक्रन्दनेन अनिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना इषुहस्तेन वृष्णा इन्द्रेण तत् जयत, सहध्वं [१८५०]- हे युद्ध करनेवाले नेताओ ! शत्रुओंको रुलानेवाले, आलस्य न करनेवाले, विजयी, युद्धमें प्रवीण, युद्धमें अपने स्थानपर स्थिर रहनेवाले, शत्रु-ओंको हरानेवाले, बाणोंको हाथोंमें धारण करनेवाले बलवान् इन्द्रकी सहायतासे युद्ध जीतो और शत्रुओंको हटाओ।

३ सः इषुहस्तैः वशी, सः निषङ्गिभिः सः इन्द्रः युधः गणेन संसृष्टा, संसृष्टजित्, बाहुशर्धी उग्रधन्वा प्रहितामिः अस्ता [१८५१]- वह इन्द्र बाण हाथमें धारण करनेवाले योधाओंकी सहायतासे सब शत्रुओंको अपने अधिकारमें रखता है। वह तलवार हाथमें रखनेवाले योधाओं-की सहायतासे शत्रुओंको वशमें करता है। वह इन्द्र युद्ध करनेमें प्रवीण शत्रुओंके समूहके साथ एकदम युद्ध करता है। वह युद्ध जीतनेवाला, बाहुबलसे सामर्थ्यवान्, धनुष चलानेमें कुशल और छोडे हुए बाणोंसे शत्रुओंका वध करनेवाला है।

४ हे बृहस्पते ! रथेन परिदीय, रक्षोहा, अमित्रान् अपबाधमानः, सेनाः प्रभंजन् प्रमृण, युधा जयन्, अस्माकं रथानां अविता पधि [१८५२]- हे बहुतोंका पालन करनेवाले इन्द्र ! रथसे यहां आ, राक्षसोंको मारने-वाला, शत्रुओंको रोकनेवाला, तू शत्रुकी सेनाको छिन्नभिन्न करके उनको नष्ट कर। युद्धमें जय प्राप्त कर और हमारे रथका रक्षक हो।

५ हे इन्द्र ! बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सह-स्वान् वाजी सहमानः उग्रः अभिवीरः अभिसत्वा, सहोजाः गोवित्, जैत्रं रथं आतिष्ठ [१८५३] हे इन्द्र ! तू सबका बल जानता है। महान् विशेष सामर्थ्यवान् वीर, शत्रुको हरानेवाला, बलवान् और साहस दिखानेवाला, उग्र महावीर, प्रभाव डालनेवाले सामर्थ्यसे युक्त, गायोंको पालनेवाला तू विजयी रथ पर बैठ।

६ हे सजाताः ! गोत्राभिदं गोविदं वज्रबाहुं अज्म-जयन्तं ओजसा प्रमृणन्तं इमं इन्द्रं अनुवीरयध्वं अनु-संरभध्वम् [१८५४]- हे युद्ध करनेवाले वीरो ! शत्रुओंके किले तोडनेवाले, गाय पालनेवाले, वज्रके समान कठोर बाहुओंवाले, युद्ध जीतनेवाले, अपने बलसे शत्रुओंको नष्ट करनेवाले इस इन्द्रको आगे करके वीरता दिखाओ, शत्रु पर क्रोध दिखाओ।

७ गोत्राणि सहसा अभिगाहमानः अदयः वीरः शतमन्युः दुश्च्यवनः, पृतनाषाट् अयुध्यः इन्द्रः युत्सु अस्माकं सेनाः प्र अवतु [१८५५]- शत्रुके किलेमें अपनी शक्तिसे प्रवेश करनेवाला, शत्रु पर दया न करनेवाला, सैकडों प्रकारसे शत्रुपर क्रोध करनेवाला, जो अपने स्थानसे हिलाया नहीं जाता, शत्रुकी सेनाको हरानेवाला, जिसके साथ कोई भी युद्ध नहीं कर सकता ऐसा इन्द्र हमारी सेनाकी रक्षा करे।

८ मरुतः अभिभंजतीनां जयन्तीनां देव-सेनानां अग्रं यन्तु [१८५६]- मरुत वीर शत्रुओंको मारनेवाले विजयी देवसेनाके आगे चलें।

९ उग्रं शर्धः महामनसां भुवनच्यवानां जयतां देवानां घोषः उदस्थात् [१८५७]- उदार मनके, शत्रुके वीरोंको स्थान भ्रष्ट करनेवाले विजयी देवोंके उग्र बलके कारण होनेवाले जयघोष सुनाई देते हैं।

१० हे मघवन् ! आयुधानि उद्धर्षय [१८५८] -हे इन्द्र ! हमारे शस्त्रधारी वीरोंका उत्साह बढा।

११ मामकानां सत्वनां मनांसि उत् हर्षय [१८५८]- हमारे बलवान् वीरोंका मन हर्षित कर।

१२ वाजिनां वाजिनानि उत् जयतां रथानां घोषाः उत् यन्तु [१८५८]- हमारे घोडोंके वेग बढा। हमारे विजयी रथोंका शब्द सुनाई दे

१३ अस्माकं समृतेषु ध्वजेषु इन्द्रः [१८५९]- हमारे ध्वजाधारी सैनिकोंकी इन्द्र रक्षा करे।

१४ अस्माकं इषवः जयन्तु [१८५९]- हमारे बाण विजयी हों।

१५ अस्माकं वीराः उत्तरे भवन्तु [१८५९]- हमारे वीर विजयी हों।

१६ देवाः ! अस्मान् हवेषु अवत [१८५९]- हे देवो ! हमें युद्धमें सुरक्षित रखो।

१७ या असौ ओजसा स्पर्धमाना परेषां सेना नः अभ्येति, तां अपव्रतेन तमसा गूहत, यथा एतेषां अन्यः अन्यं न जानात् [१८६०]- जो यह अपने सामर्थ्यसे हमसे मुकाबला करती हुई शत्रुकी सेना हम पर चढाई करती हुई आती है, उस शत्रुकी सेना पर अन्धकार छा जाए ऐसा कर, जिससे कि वे एक दूसरेको पहचान न सकें।

" अपव्रत तमसास्त्र " नामका अस्त्र प्रयोग युद्धमें होता था, उससे शत्रुके वीर अन्धेरेके कारण अन्धेसे हो जाते थे और आपसमें एक दूसरेको पहचान भी नहीं सकते थे।

१८ अप्वे ! परा इहि, अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती अंगानि गृहाण [१८६१]- हे पाप ! हमसे दूर हो, इन शत्रुओंके चित्तोंको मोहित कर और उनके शरीरके अंग जकड दे।

१९ अभि प्रेहि, हृत्सु शोकैः निर्दह [१८६१]- शत्रु पर आक्रमण कर, उनके हृदय शोकसे जला दे।

२० अमित्राः अन्धेन तमसा सचन्ताम् [१८६१] हमारे शत्रु घोर अन्धकारसे व्याकुल हों।

२१ नरः प्र इत, जयत, इन्द्रः वः शर्म यच्छतु [१८६२]- हे वीरो ! शत्रु पर आक्रमण करो, विजय प्राप्त करो, इन्द्र तुम्हारा कल्याण करे।

२२ वः बाहवः उग्राः सन्तु, यथा अनाधृष्याः आसथ [१८६२]- तुम्हारी भुजायें वीरभाव दिखानेवाली हों, जिनके कारण तुम पर शत्रु आक्रमण न कर सकें।

२३ हे ब्रह्मसंशिते शरव्ये। अवसृष्टा परा पत, अमित्रान् प्र पद्यस्व, अमीषां कंचन मा उच्छिषः [१८६३]- हे ज्ञानपूर्वक छोडे गए बाण ! तू दूर जाकर शत्रुपर गिर। उनमें कोई भी जिन्दा न रहे।

२४ सुपर्णाः कंकाः एनान् अनु यन्तु [१८६४]- उत्तम पंखवाले मांसभक्षक पक्षी (बाण) इन शत्रुओंका पीछा करें।

२५ असौ सेना गृध्राणां अन्नं अस्तु [१८६४]- यह शत्रुकी सेना गिद्धोंका अन्न बने।

२६ एषां मा अमोचि, अघहारः च न, वयांसि एनान् सर्वान् अनु संयन्तु [१८६४]- इन शत्रुओंमेंसे कोई भी न बचे। अत्यधिक पापी न होनेवाला शत्रु भी न बचे, मांसभक्षक पक्षी इन शत्रुओंका पीछा करें।

२७ अस्मान् तां अभि शत्रुयतीं अमित्रसेनां प्रति दहतं [१८६५]- हम पर चलकर आनेवाले उस शत्रुकी सेनाको जला दे।

२८ यत्र बाणाः सम्पतन्ति, तत्र नः शर्म यच्छतु [१८६५]- जहां बाण शत्रुकी ओरसे आकर हम पर गिरते हैं, उस युद्धमें हमें सुख मिले।

२९ हे इन्द्र ! रक्षः मृधः विजहि, अभिदासतः अमित्रस्य मन्युं [१८६७]- हे इन्द्र ! राक्षसों और हिंसकोंको मार, हमारी हानि करनेवाले शत्रुओंके क्रोधको समाप्त कर।

३० हे इन्द्र ! नः मृधः विजहि, पृतन्यतः नीचा यच्छ, यः अस्मान् अभिदासति, अधरं तमः गमय [१८६८]- हे इन्द्र ! हमारे हिंसक शत्रुओंको हरा, हम पर सेना भेजनेवालोंको नीचे गिरा। जो हमें दास बनानेकी इच्छा करता है उसे गहरे अन्धकारमें डाल दे।

३१ याभ्यां असुराणां महत् सहः जितं, तौ इन्द्रस्य स्थविरौ युवानौ अनाधृष्यौ सुप्रतीकौ असह्यौ बाहू योगे आसते प्रथमौ युंजीत [१८६९]- जिनसे असुरोंके महान् बलको जीता, उन इन्द्रकी बडी, तरुण, आक्रमण किए जानेके अयोग्य, उत्तम प्रतीक, शत्रुके लिए असह्य ऐसी दोनों ही भुजाएं युद्धके समय उपयोगमें आती हैं।

३२ हे राजन् ! ते मर्माणि वर्मणा छादयामि [१८७०]- हे राजन् ! तेरे मर्म स्थान कवचसे मैं ढकता हूँ।

३३ देवाः जयन्तं त्वा अनुमदन्तु [१८७०]- देव जीतनेवाले तुझे आनन्दित करें।

३४ अमित्राः अशीर्षाणः अहयः इव अन्धाः भवत [१८७१]- शत्रु कटे हुए सिरवाले सांपोंके समान अन्धे हो जांए।

३५ तेषां वरं वरं इन्द्रः हन्तु [१८७१]- शत्रुओंके मुख्य - मुख्य वीरोंको इन्द्र मारे।

३६ यः स्वः अरणः यः च निष्ट्यः नः जिघांसति तं सर्वे देवाः धूर्वन्तु [१८७२]- जो अपना होते हुए भी

द्वेष करता है और जो गुप्त रह करके हमें मारना चाहता है। उसे सब देव नष्ट करें।

३७ ब्रह्म मम अन्तरं वर्म [१८७२]- ज्ञान मेरे अन्दरका कवच है।

३८ हे इन्द्र ! कुचरः गिरिष्ठाः मृगः न भीमः [१८७३]- हे इन्द्र ! पर्वत पर रहनेवाले सिंहके समान तू शत्रुओंके लिए भयंकर है।

३९ परस्याः परावतः आजगन्थ [१८७३]- बहुत दूरके स्थानसे भी तू हमारे पास आ।

४० सृकं तिग्मं पविं संशाय शत्रून् विताढि, मृधः वि नुदस्व [१८७३]- दूर पहुंचनेवाले तीक्ष्ण शस्त्रको और अधिक तीक्ष्ण करके शत्रु पर फेंक व दुष्टोंको मार।

४१ हे देवाः ! कर्णेभिः भद्रं शृणुयाम [१८७४]- हे देवो ! कानोंसे हम कल्याण करनेवाली बात सुनें।

४२ अक्षभिः भद्रं पश्येम [१८७४]- आंखोंसे कल्याणकारक दृश्य देखें।

४३ स्थिरैः अंगैः तनूभिः तुष्टुवांसः यत् देवहितं आयुः व्यशेमहि [१८७४]- सुस्थिर अंगोंसे युक्त शरीरोंसे ईश्वरकी स्तुति करते हुए देवों द्वारा दी हुई आयुका उपभोग करें।

४४ इन्द्रः, पूषा बृहस्पतिः नः स्वस्ति दधातु [१८७५]- इन्द्र, पूषा, बृहस्पति आदि देव हमारा कल्याण करें।

उपमा

१ वृषभः शिशानः न [१८४९]- बैलके समान शत्रुको टक्कर देनेवाला।

२ विशिखाः कुमाराः इव [१८६६]- शिखासे रहित कुमारोंके समान तीक्ष्ण (बाणाः) बाण होते हैं।

३ अशीर्षाणः अहयः इव [१८७१]- कटे हुए सिरवाले सांपोंके समान (अमित्राः अन्धाः भवत) शत्रु अन्धे हो जाएं।

४ कुचरः गिरिष्ठाः मृगः न [१८७३]- पर्वत पर रहनेवाले सिंहके समान (इन्द्रः भीमः) इन्द्र भयंकर है।

एकविंशाध्यायान्तर्गत ऋषि-देवता-छन्द सूची

मंत्रसंख्या	ऋग्वेदस्थानं	ऋषिः	देवता	छन्दः
१८४९	१०।१०३।१	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	इन्द्रः	त्रिष्टुप्
१८५०	१०।१०३।२	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	,,	,,
१८५१	१०।१०३।३	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	,,	,,
१८५२	१०।१०३।४	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	बृहस्पतिः	,,
१८५३	१०।१०३।५	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	इन्द्रः	,,
१८५४	१०।१०३।६	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	,,	,,
१८५५	१०।१०३।७	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	,,	,,
१८५६	१०।१०३।८	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	,,	,,
१८५७	१०।१०३।९	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	,,	,,
१८५८	१०।१०३।१०	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	,,	,,
१८५९	१०।१०३।११	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	,,	,,
१८६०	अथर्व. ३।२।६	अथर्वा	मरुतः	,,
१८६१	१०।१०३।१२	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	अप्वा	,,

मंत्रसंख्या	ऋग्वेदस्थानं	ऋषिः	देवता	छन्दः
१८६१	१०।१०३।१३	अप्रतिरथ ऐन्द्रः	इन्द्रो मरुतो वा	अनुष्टुप्
१८६३	६।७५।१७	पायुर्भारद्वाजः	इषवः	,,
१८६४	—	—	इन्द्रः	त्रिष्टुप्
१८६५	—	—	,,	अनुष्टुप्
१८६६	६।७५।१७	पायुर्भारद्वाजः	संग्रामाशिषः	पंक्तिः
१८६७	१०।१५१।३	शासो भारद्वाजः	इन्द्रः	अनुष्टुप्
१८६८	१०।१५१।४	शासो भारद्वाजः	,,	,,
१८६९	—	—	,,	विराड् जगती
१८७०	६।७५।१८	पायुर्भारद्वाजः	वर्मसोमवरुणाः	त्रिष्टुप्
१८७१	अथर्व. ६।९७।१	अथर्वा	इन्द्रः	अनुष्टुप्
१८७२	६।७५।१९	पायुर्भारद्वाजः	वर्म सोमवरुणाः	,,
१८७३	१०।१८०।१	जय ऐन्द्रः	इन्द्रः	त्रिष्टुप्
१८७४	१।८९।८	गोतमो राहूगणः	विश्वदेवाः	,,
१८७५	१।८९।६	गोतमो राहूगणः	,,	विराट्स्थाना

सामवेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अक्रांसमुद्रः प्रथम ५१९; १२१३
अक्षन्नमीमदन्त ४१५
अगन्म महा नमसा १३०४
अगन्म बृत्रहन्तमं ८९
अग्न आ याहि वीतये १; ६६०
अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं १५५१
अग्न आयूंषि पवस ६१७; १४६४; १५१८
अग्न ओजिष्ठमा भर ८१
अग्निः प्रत्नेन जन्मना १७११
अग्निः प्रियेषु धामसु १७१०
अग्निं तं मन्ये ४१५; १७३७
अग्निं दूतं वृणीमहे ३; ७९०
अग्निं नरो दीधितिभिः ७१; १३७३
अग्निं वो देवमग्निभिः १२१९
अग्निं वो वृधन्तम् २१; ९४६
अग्निं सूनुं सहसो १५१५
अग्निं हिन्वन्तु नो १५२७
अग्निं होतारं मन्ये ४६५; १८१३
अग्निनाग्निः समिध्यते ८४४
अग्निमग्निं हवीमभिः ७९१
अग्निमिंधानो मनसा १९
अग्निमीडिष्वावसे ४९
अग्निमीडे पुरोहितं ६०५
अग्निरस्मि जन्मना ६१३
अग्निरिन्द्राय पवते १८२१
अग्निरुक्थे पुरोहितो ४८
अग्निर्ऋषिः पवमानः १५१९
अग्निर्जागार तमृचः १८२७
अग्निर्जुषत नो गिरो १४०६
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः १८३१
अग्निर्मूर्धा दिवः २७; १५३२
अग्निर्वृत्राणि जंघनद् ४; १३९६
अग्निर्हि वाजिनं विशे १७३८
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा २२
अग्ने केतुर्विशामसि १५३१
अग्ने जरितर्निदस्पतिः २९
अग्ने तमद्याश्वं ४३४; १७७७
अग्ने तव श्रवो वयो १८१६
अग्ने त्वं नो अन्तम ४४८; ११०७
अग्ने देवां इहा ७९२
अग्ने नक्षत्रमजरमा १५३०
अग्ने पवस्व स्वपा १५१०
अग्ने पावक रोचिषा १५११
अग्ने मृड महाँ असय २३
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे १००
अग्ने युंक्ष्वा हि ये तव १५, १३८३
अग्ने रक्षा णो अंहसः ९४
अग्ने वाजस्य गोमत ९९; १५६१
अग्ने विवस्वदा १०
अग्ने विवस्वदुषसः ४०; १७८०
अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्ऋषि १५०३
अग्ने सुक्रतमे रथे १३५०
अग्ने स्तोमं मनामहे १४०५
अग्नेगो राजाप्यस्तविष्यते १६१६
अग्ने सिन्धूना पवमानो १०३३
अचिक्रदद्वृषा हरिः ४९७; १०४१
अचेत्यग्निश्चिकितिः ४४७
अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः ५५५
अच्छा कोशं मधुश्चुतं ६५८
अच्छा नः शीरशोचिषं १५५४
अच्छा नो याह्या १३८४
अच्छा व इन्द्रं मतयः ३७५
अच्छा समुद्रमिन्दवो ६५९
अच्छा हि त्वा सहसः १५५३
अजीजनो अमृत १५०८
अजीजनो हि पवमान १३६५
अञ्जते व्यञ्जते समंजते ५६४; १६१४
अतश्चिदिन्द्र न उपा ११५
अतस्त्वारयिः ८३८
अतीहि मन्युषाविणं २२३
अतो देवा अवन्तु नो १६७४
अत्यायातमश्विना तिरो १७४४
अत्या हियाना न ११९१
अत्रा वि नेमिरेषामुरां १८०८
अत्रा ह गोरमन्वत १४७; ९१५
अथा ते अन्तमानां १०८९
अदर्दरुत्समसृजो ३१५
अदर्शि गातुवित्तमो ४७; १५१५
अदाभ्यः पुरएता १५५६
अदब्रस्य केतवो ६३४
अद्याश्वा शः श्व इन्द्र १४५८
अद्या नो देव सवितः १४१
अध क्षपा परिष्कृतो १६३१
अध ग्मो अध वा दिवो ५१
अध त्विषीमा अभ्योजसा १४८८
अध धारया मध्वा १०१०
अध यदिमे पवमान १४९६
अधा त्वं हि नस्करो १५५१
अधा हिन्वान इन्द्रियं ८३९
अधा ह्यिन्द्र गिर्वण ४०९; ७१०
अधा ह्यग्ने क्रतोः १७७८
अधि गव्यस्मिन्वाजिनी ५३९
अधुक्षत प्रियं मधु १०३९
अध्वर्यो अद्रिभिः ४९२; १२०५
अध्वर्यो द्रावया त्वं ३०८
अनवस्ते रथं ४४०
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतु १६१८
अनु त्वा रोदसी उभे ९८९
अनु प्रत्नस्यौकसो ७४४
अनु प्रत्नास आयवः ५०१
अनु हि-त्वा सुतं ४३१; १३६३
अनूपे गोमान् गोभिः ९९८
अन्तश्चरति रोचनास्य ६३१; १३७७
अन्वा भवसि मित्रा ववता १८७१
अपघ्नन्तो अराव्णः ११९५
अपघ्नन्वते मृधो ५१०; १२१३
अपघ्नन्वसे मृधः ४९०; १२३७
अपत्यं शृजनं रिपुं १०५
अपत्ये तायवो ६३३

*

अप द्वारा मतीनां ११२४
अपां नपातं सुभगं १४१४
अपां फेनेन नमुचेः २११
अपादु शिप्र्यन्धसः १४५
अपामीवामपस्रिध ३९७
अपामिवेदूर्मयस्तत्तुराणाः ५४४
अपिबत्कद्रुवः १३१
अपूर्व्या पुरुतमा ३११
अप्सा इन्द्राय वायव ९९५
अप्सु रेतः शिश्रिये १८४४
अबोधि होता यजथाय १७४७
अबोध्यग्निः समिधा ७३; १७४६
अबोध्यग्निर्जर उदेति १७५८
अभिक्रन्दन्कलशं १०३१
अभि गव्यानि वीतये १०६२
अभि गावो अधन्विषुरापो ९६१
अभिगोत्राणि सहसा १८५५
अभि ते मधुना ६५१
अभित्यं देवं सविता ४६४
अभि त्यं मेषं ३७३
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं ५१८; १४०८
अभि त्वा पूर्वपीतय ७५६; १५७३
अभि त्वा वृषभा सुते १६१; ७३१
अभि त्वा शूर नोनुमो १३२; ६८०
अभि द्युम्न बृहद्यश ५७९; १०११
अभि द्रोणानि बभ्रवः ७६५
अभि द्विजन्मा त्री १७७१
अभि प्र गोपतिं १६८; १४८९
अभि प्रयांसि वाहसा १५५७
अभि प्र वः सुराधसं २३५, ८११
अभि प्रियं दिवस्पदम् ११२७
अभिप्रियाणि काव्या १७६२
अभि प्रियाणि पवते ५५४; ७००
अभि प्रिया दिवः ११०४
अभि ब्रह्मीरनूषत ८७०
अभि वस्रा सुवसनान्यर्षाभि १४२७
अभि वाजी विश्वरूपो १८४३
अभि वायुं वित्यर्षा १४०६
अभि विप्रा अनूषत ११९७
अभि वो वीरमन्धसो २६५
अभि व्रतानि पवते १०११
अभि सोमास आयवः ५१८; ८५६
अभि हि सत्य सोमपा ११४८
अभी नवन्ते अद्रुहः ५५०
अभी नो अर्ष दिव्याः १४१८
अभी नो वाजसातमं ५४९; ११३८
अभीषतस्तदा ३०९
अभी षु णः सखीनाम् ६८४
अभ्यभि हि श्रवसा १५०७
अभ्यर्ष बृहद्यशो ९७१
अभ्यर्ष स्वायुध १०५३
अभ्यर्षानपच्युतो १०५४
अभ्यारमिद्द्रयो १६०३
अभ्रातृव्यो अनी ३९९; १३८९
अमित्र सेना मघवन् १८६५
अमित्रहा विचर्षणिः १४४७
अमी ये देवाः ३६८
अमीषां चित्तं प्रति १८६१
अयं त इन्द्र सोमो १५९; ७१५
अयं दक्षाय साधनोऽयं ११००
अयं पुनान उषसो ८१३
अयं पूषा रयिर्भगः ५४६; ८१८
अयं भराय सानसिः ६९५
अयं यथा न आभुवत् ९४७
अयं वां मधुमत्तमः ३०५
अयं वां मित्रावरुणा ९१०
अयं विचर्षणिर्हितः ५०८
अयं विश्वा अभि ९४८
अयं विश्वानि तिष्ठति ७५७
अयं स यो दिवस्परि ९००
अयं सहस्रभानवो ४५८
अयं सहस्रमृषिभिः १६०८
अयं सहस्रा परि युक्ताः १८४५
अयं स होता यो १७५६
अयं सूर्य हवोपहगयं ७५६
अयं सोम इन्द्र १४७१
अयमग्निः सुवीर्यस्य ६०
अयमु ते समतसि १८३; १५९९
अया चित्तो विपानया ८०५
अया धिया च गव्यया १८८
अया निर्जघ्नरोजसा १७१५
अया पवस्व देवयु ७७१
अया पवस्व धारया ४९३; ११९६
अया पवा पवस्वेना ५४१; ११०४
अया रुचा हरिण्या ४६३; १५९०
अया वाजं देवहितं ४५४
अयावीती परिस्रव ४९५; ११९०
अया सोम सुकृत्यया ५०७
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः ६३९
अयुक्त सूर एतशं ११९७
अयुद्ध इद्युधाश्वतं १३४०
अरं त इन्द्र कुक्षये १६६१
अरं त इन्द्र श्रवसे २०९
अरण्योर्निहितो जातवेदा ७९
अरमश्वाय गायत ११८
अरुरुचदुषसः पृश्निः ५९६, ८७७
अर्चत प्रार्चत ३६१
अर्चति नारीरपसो १७५७
अर्चत्यर्कं मरुतः ४४५; ११८४
अर्वाङ् त्रिचक्रो १७३०
अर्षा नः सोम शं गवे १२३७
अर्षा सोम द्युमत्तमो ५०३, ९९४
अलर्षिराति वसुदामुप १३२०
अवक्रक्षिणं वृषभं १३६१
अव द्युतानः कलशाँ ७०१
अवद्रप्सो अंशुमतीं ३२१
अवसृष्टा परापत १८६३
अव स्म दुर्हणायतो १०९१
अवा नो अग्न ऊतिभिः १५२४
अव्या वारे परि ११३३
अव्या वारैः परि ११०७
अश्वं न गीर्भिः रथ्यं १५८४
अश्वं न त्वा वारवन्तं १७, १६३४
अश्विना वर्तिरस्मदा १७३३
अश्वो रथी सुरूप २७७
अश्वेव चित्रारुषी १७२६
अश्वो न चक्रदो वृषा ७८३
असाढमुग्रं पृतनासु ११५६
असर्जि कलशा अभि ९४२
असर्जि रथ्यो यथा ४९०
असर्जि वक्वा रथ्ये ५४३

असावि देवं ३१३
असावि सोम इन्द्र ३४७; १०२८
असावि सोमो अरुषो ५६२; १३१६
असाव्यंशुर्मदायाप्सु ४७३; १००८
असि हि वीर सेन्यो १००२
असृक्षत प्र वाजिनो ४८२; १०३४
असृग्रं देववीतये १८११
असृग्रमिन्दवः पथा ११२८
असृग्रमिन्द्र ते गिरः १०५
असौ या सेना मरुतः १८६०
अस्तावि मन्म पूर्व्यं १६७७
अस्ति सोमो अयं सुतः १७४; १७८५
अस्तु श्रौषट् पुरो ४६१
अस्मभ्यं त्वा वसुवेदमभि ५७५
अस्मभ्यं रोदसी ११२६
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं १०४६
अस्माअस्मा इदन्धसो १४४३
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु १८५९
अस्य प्रत्नामनुद्युतं ७५५
अस्य प्रेषा हेमना ५२६; १३९९
अस्य व्रतानि धृषे १७१६
अस्येदिन्दो मदेष्वा ६९६
अस्येदिन्द्रो वावृधे १५७४
अहं प्रत्नेन जन्मना १५०१
अहमस्मि प्रथमजा ५९४
अहमिद्धि पितुष्परि १५१; १५००
आ गन्ता मा रिषण्यत ४०१
आग्निं न स्ववृक्तिभिः ४२०
आग्ने स्थूरं रयिं १५१९
आ घा गमद्यदि श्रवत् ७४५
आ घा त्वावान् त्मना १०८५
आ घा ये अग्निमिन्धते १३३, १३३८
आ जागृविर्विप्र ऋतं १३५७
आ जामिरत्के अव्यत १३८७
आ जुहोता हविषा ६३
आ तिष्ठ वृत्रहन्रथं १०१९
आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं १६७; ७२८
आ तू न इन्द्र वृत्रहन् १८१
आ ते अग्न इधीमहि ४१९, १०२२
आ ते अग्न ऋचा हविः १०२३
आ ते दक्षं मयोभुव ४९८; ११३७
आ ते वत्सो मनो ८; ११६६
आ त्वा गिरो ३४९
आ त्वा प्रावा वदन्निह १८०९
आ त्वा३य सबर्दुघां १९५
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी ६६७
आ त्वा रथं यथो ३'१४; १७७१
आ त्वा रथे हिरण्यये १३९१
आ त्वा विशन्त्विन्दवः १९७; १६६०
आ त्वा सखायः ३४०
आ त्वा सहस्रमा ५४५; १३९१
आ त्वा सोमस्य ३०७
आ त्वेता नि षीदत १६४; ७४०
आदह स्वधामनु ८५१
आदित्प्रत्नस्य रेतसो २०
आदित्यैरिन्द्रः सगणो १११९
आदीं हंसो यथा गणं ७७०
आदीं वेचित्पश्यमानास १४९५
आदीं त्रितस्य योषणो ७७१
आधीमश्वं न १०१०
आ न इन्दो शतग्विनं ८२५
आ नः सुतास १३१८
आ नः सोम संयतं ११५४
आ नः सोम सहो ८३४
आ नस्ते गन्तु मत्सरो १४३३
आ नो अग्ने रयिं १५१५
आ नो अग्ने वयोवृधं ४३
आ नो अग्न सुचेतुना १५१६
आ नो भज परमेष्वा १४९९
आ नो मित्रावरुणा २१०; ६६३
आ नो रत्नानि बिभ्रतौ १७४५
आ नो वयो वयः ३५१
आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं २६९; १४९२
आ पप्राथ महिना ८६१
आ पवमान धारया ११०३
आ पवमान सुष्टुतिं ९०६
आ पवस्व सुवीर्यं ७८६
आ पवस्व मदिन्तम ११०८
आ पवस्व महीमिषं ८९५
आ पवस्व सहस्रिणं ५०१
आपानासो विवस्वतो ११२३
आपो हि ष्ठा मयोभुवः १८३७
आ प्रागाद्भद्रा ६०८
आ बुन्दं वृत्रहा ददे २१६
आ भात्यग्निरुषसां १७५१
आभिष्टवमभिष्टिभिः ६४१
आ मन्द्रमा वरेण्यमा ११३८
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिः २४६; १७१८
आमासु पक्वमैरय १४३१
आ मित्रे वरुणे भगे ११३५
आ यः पुरं नार्मिणीम् १७७४
आयं गौः पृश्निरक्रमीद् ६३०; १३७६
आ यद् दुवः शतक्रतवा १०८६
आ ययोस्त्रिंशतं १०६०
आ याहि वनसा ४४३
आ याहि सुषुमा हि त १९१; ६६६
आ याह्ययमिन्दवे ४०१
आ याह्युप नः सुतं ९१७
आ योनिमरुणो ९१५
आ रयिमा सुचेतुनमा ११३९
आ व इन्द्रं क्रिविं यथा ११४
आ वंसते मघवा ८७९
आ वच्यस्व महि १०३८
आ वच्यस्व सुदक्ष १०११
आविर्मर्या आ वाजं ४३५
आविवासन्परावतो अथो ९०१
आविशन्कलशं सुतो ४८९
आ वो राजानमध्वरस्य ६९
आशुः शिशानो वृषभो १८४९
आशुरर्षं बृहन्मते ८९८
आ सुते सिञ्चत श्रियं १४८०
आ सोता परि ५८०; १३१४
आ सोम स्वानो ५१३; १६८९
आ हरयः ससृज्रिरे १४९०
आ हर्यताय धृष्णवे ५५१
आ हर्यतो अर्जुनो ७६८
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं ७२१
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः ९१४
इडामग्ने पुरुदंसं ७६
इत ऊति वो अजरं १८३

इत एत उदारुहन् ९१
इत्था हि सोम ४१०
इदं त एकं पर उ त ६५
इदं वसो सुतमन्धः १२४;७३४
इदं वां मदिरं १०७५
इदं विष्णुर्विचक्रमे २२१;१६६१
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां १७४९
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां १४५५
इदं ह्यन्वोजसा सुतं १६५;७३७
इनो राजन्नरातिः समिद्धो १५४६
इन्दुः पविष्ट ४३१
इन्दुः पविष्ट चेतनः ४८१
इन्दुरिन्द्राय पवत ८७३
इन्दुर्वाजी पवते ५४०;१०१९
इन्दो यथा तव ९७६
इन्दो यदद्रिभिः ९६४
इन्द्र आसां नेता १८५६
इन्द्र इद्धर्योः सचा ५९७;७९७
इन्द्र इज्जो महोनां ७१५
इन्द्र इषे ददातु न १९९
इन्द्र सकथेभिर्मन्दिष्ठो २१६
इन्द्रः स दामने १२१३
इन्द्रं वयं महाधन १३०
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युं १७९५
इन्द्रं विश्वा अवी ३१३;८१७
इन्द्रं वो विश्वतस्परि १६१०
इन्द्र क्रतुं न आ भर १५१;१४५६
इन्द्र जठरं नव्यं ९५३
इन्द्र जुषस्व प्र वहा ९५१
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ५८६
इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवो ४१२
इन्द्र त्रिधातु शरणं ५६६
इन्द्र नेदीय एदिहि १८१
इन्द्र तं शुम्भ पुरुहुत ९३४
इन्द्रं नरो नेमधिता ३१८
इन्द्रं धनस्य सातये ६४७
इन्द्रमग्निं कविच्छदा ६७१
इन्द्रमच्छ सुता ५६६;६९४
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहत् १९८;७९६
इन्द्रमिद्देवतातय २४९,१५८७
इन्द्रमेद्धरी वहतो १०३०
इन्द्रमीशानमोजसाभि ११५१
इन्द्र वाजेषु नोऽव ५९८;७९८
इन्द्र शुद्धो न आगहि १४०३
इन्द्र शुद्धो हि नो १४०४
इन्द्रश्च वायवेषां १६१९
इन्द्र सुतेषु सोमेषु ३८१;७४६
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो ९५४
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य १३६९
इन्द्र स्थातर्हरीणां १६८१
इन्द्रस्य नु वीर्याणि ६१२
इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ १८६९
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य १८५७
इन्द्रस्य सोम पवमान १२३०
इन्द्रस्य सोम राधसे ११८०
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप १५७७;१६९४
इन्द्राग्नी अपादियं २८१
इन्द्राग्नी आगतं सुतं ६६९
इन्द्राग्नी जरितुः सचा ६७०
इन्द्राग्नी तविषाणि वां १५७८;१६९५
इन्द्राग्नी नवतिं पुरः १५७६;१७०४
इन्द्राग्नी युवामिमे ९९१
इन्द्राग्नी रोचना दिवः १६९३
इन्द्रा नु पूषणा वयं २०१
इन्द्रापर्वता बृहता ३३८
इन्द्राय गाव आशिरं १४९१
इन्द्राय गिरो अनिशित ३३९
इन्द्राय नूनमर्चत ९५१
इन्द्राय पवते मदः ५२०
इन्द्राय मद्वने सुतं १५८;७११
इन्द्राय साम गायत ३८८;१०१५
इन्द्राय सोम सुषुतः ५६१
इन्द्राय सोम पातवे मदाय १४४८
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने १३३१;१६७९
इन्द्रा याहि चित्रभानो ११४६
इन्द्रा याहि तूतुजानः ११४८
इन्द्रा याहि धियेषितो ११४७
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते ४७१;१०७६
इन्द्र अग्ना नमो बृहत् ८००
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे ८५०
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो १८०
इन्द्रो अंग महद्भयम् २००
इन्द्रो दधीचो अस्थभिः १७९;९१३
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस ७६९
इन्द्रो मदाय वावृधे ४११;१००१
इन्द्रो महा रोदसी १५८८
इन्द्रो राजा जगतः ५८७
इन्द्रो विश्वस्य ४५६
इन्धे राजा समर्यो ७०
इम इन्द्र मदाय ते २९४
इम इन्द्राय सुन्विरे २९३
इमा उ त्वा पुरुवसो १४६
इम उ त्वा विचक्षते १३६
इमं स्तोममर्हते ६६; १०६४
इममिन्द्र सुतं पिब ३४४; ९४९
इममू षु त्वमस्माकं २८; १४९७
इमं मे वरुण श्रुधी १५८५
इमं वृषणं कृणुतैकमिन्मामू ५२१
इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो १५०;१६०७
इमा उ त्वा सुतेसुते २०१
इमा उ वां दिविष्टय ३०४; ७५३
इमा नु कं भुवना ४५१; १११०
इमास्त इन्द्र पृश्नयो १८७
इमे त इन्द्र ते वयं ३७३
इमे त इन्द्र सोमाः २११
इमे हि ते ब्रह्मकृतः १६७६
इयं धामस्य मन्मन ९१६
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व १८१९
इषं तोकाय नो दधत् ९९६
इषे पवस्व धारया १०५; ८४१
इष्कर्तारमध्वरस्य १८१०
इष्टा होत्रा असृक्षत १५१
इह त्वा गोपरीणसं ७३३
इहेव शृण्व एषां १३५
इह्यिष्वा हि प्रतीच्यां १०३
ईंखयंतीरपस्युव १७५
ईड्येन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि १५३८
ईशान इमा भुवनानि ९१७
ईशिषे वार्यस्य हि १५३१
ईशे हि शक्रस् ६४६

उक्थं च न शस्यमानं २२५; १८०५
उक्थमिन्द्राय शंस्यम् ३६३
उक्षा मिमेति प्रति १३७१
उग्रा विघनिना मृध ८५४
उच्चा ते जातमन्धसो ४६७; ६७१
उत त्या हरितो रथे १२१८
उत न एना पवया ११०५
उत नः प्रिया प्रियासु १४६१
उत नो गोमतीरिषो १०६३
उत नो गोविदश्ववित् ९७७
उत नो गोषणिं १५९३
उत नो वाजसातये ११९०
उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया १४१०
उत ब्रुवन्तु जन्तवः १३८१
उत वात पितासि नः १८४१
उत सखास्यश्विनोरुत् १७१७
उत स्या नो दिवा १०१
उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य १३५३
उता यातं संगवे १७५४
उतो न्वस्य जोषमा १७८७
उत्तिष्ठन्नोजसा सह ९८८
उत्त बृहन्तो अर्चयः १५४१
उत्ते शुष्मास ईरते ११०५
उत्ते शुष्मासो अस्थू १७१४
उत्त्वा मंदन्तु सोमाः १९४; १३५४
उदग्ने भारत द्युमत् १३८५
उदग्ने शुचयस्तव १५३४
उदप्लन्नरुणा मानवो १७५६
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद् ५८९
उदुत्यं जातवेदसं ३१
उदु त्ये मधुमत्तमा ९५१; १३६१
उदु त्ये सूनवो गिरः २२१
उदु ब्रह्माण्यैरत ३३०
उदुस्रियाः सृजते सूर्यः ७५१
उद्वा अजदभिरोभ्यः १६४१
उद्वेदभि श्रुतामघं ११५; १४५०
उद्वर्षय मघवन् १८५८
उद्यस्य ते नवजातस्य ११११
उद्यामेषि रजः ६३८
उपच्छायामिव घृणेः १७०६
उप त्रितस्य पाष्यो १०१४
उप त्वा कर्मन्नूतये स नो ७०९
उप त्वाग्ने दिवेदिवे १४
उप त्वा जामयो गिरो १३; १५७०
उप त्वा जुह्वो३ मम १५४१
उप त्वा रण्वसंदृशं १७०५
उप नः सवना गहि १०८८
उप नः सूनवो गिरः १५९५
उप नो हरिभिः १५०; १७९०
उप प्रक्षे मधुमति ४४४; ११९५
उपप्रयन्तो अध्वरं १३७९
उप शिक्षापतस्थुषो ७६१
उप स्रक्वेषु बप्सतः १४८१
उपह्वरे गिरीणाम् १४३
उपास्मै गायता नरः ६५१; ७६३
उपो मतिः पृच्यते १३७१
उपो षु जातमप्तुरं ४८७; ७६१; १३३५
उपोषु शृणुहि ४१६
उपो हरीणां पतिं १५१०
उभयं शृणवच्च न २९०; ११३३
उभयतः पवमानस्य ८८७
उभे यदिन्द्र रोदसी ३७९; १०९०
उरुगव्यूतिरभयानि १४१०
उरुव्यचसे महिने १७९४
उरुशंसा नमोवृधा ६६४
उषस्तच्चित्रमा भरा १७३१
उषा अप स्वसुष्टमः ४५१
उषो अद्येह गोमत्य १७३१
उस्रा वेद वसूनां १०५८
ऊर्जा मित्रो वरुणः ४५५
ऊर्जो नपाज्जातवेदः १८१८
ऊर्जो नपातमा १७१९
ऊर्जो नपातं स ७०४
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये ५७
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये १६०१
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि १८४७
ऋचं साम यजामहे ३६९
ऋजुनीती नो वरुणो १९८
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं १४६६
ऋतस्य जिह्वा पवते ७०१
ऋतावानं महिषं १८११
ऋतावानं वैश्वानरं १७०८
ऋतेन मित्रावरुणा ८४८
ऋतेन या वृतावृधा ७९४
ऋधक्सोम स्वस्तये ६५६
ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः ११७३
ऋषिर्विप्रः पुरएता ६७९
एतं त्यं हरितो दश ११७९
एतं त्रितस्य योषणो ११७५
एतमु त्यं दश १०८१
एतमु त्यं दश क्षिपो ११७१
एतमु त्यं मदच्युतं ५८१
एतमृतीषहं सुवर्मणि १९६८
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप ११६८
एता उ त्या उषसः १७१५
एते असृग्रमिन्दवः ८३०
एते सोमा अभि ११७८
एते सोमा असृक्षत १०६१
एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धम् ३५०; १४०१
एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः ३८७
एदु मधोर्मदिन्तरं ३८५; १६८४
एना विश्वान्यर्य आ ५९३; ६७४
एना वो अग्निं नमसो ४५; ७४९
एन्दुमिन्द्राय सिंचत ३८६, १५०९
एन्द्र नो गधि प्रिय ३९३; ११४७
एन्द्र पृक्षु कासु २३१
एन्द्र याहि हरिभिः ३४८; १८०७
एन्द्र याहयुप नः ४५९
एन्द्र सानसिं रयिं ११९
एभिर्नो अर्कैर्भवा १७७९
एमेनं प्रत्येतन १४४१
एवा नः सोम परि ८६१
एवा पवस्व मदिरो ८०८
एवमृताय महे १३६८
एवा रातिस्तुविमघ ८१५
एवा ह्यसि वीरयुरेषा ११९; ८१४
एवा हि शक्रो ६४३
एवाह्येऽ३ऽ३ व ६५०
एष इन्द्राय वायवे ११८७
एष उ स्य पुरुव्रतो ११६५
एष उ स्य वृषा १२७४
एष कविरभिष्टुतः १२८६

एष गव्युरचिक्रदत् १२८९
एष दिवं वि धावति १२६१
एष दिवं व्यासरत्तिरो १२६३
एष देवः शुभायते १२८२
एष देवो अमर्त्यः १२५६
एष देवो रथर्यति १२५९
एष देवो विपन्युभिः १२६०
एष देवो विपा कृतो १२६१
एष धिया यात्यण्व्या १२६६
एष नृभिर्वि नीयते १२८८
एष पवित्रे अक्षरत्सोमो १२८१
एष पुरू धियायते १२६७
एष प्र कोशे मधुमाँ ५५६
एष प्रत्नेन जन्मना ७५८; ११६४
एष प्रत्नेन मन्मना ७५९
एष ब्रह्मा य ऋत्विय ४३८; १७६८
एष रुक्मिभिरीयते १२७०
एष वसूनि पिब्दनः १२७२
एष वाजी हितो १२८०
एष विप्रैरभिष्टुतो १२५७
एष विश्वानि वार्या १२५८
एष वृषा कनिक्रदद् १२८३
एष शुष्म्यदाभ्यः १२९१
एष शुष्म्यसिष्यदद् १२९०
एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते १२७१
एष सूर्यमरोचयत् १२८४
एष सूर्येण हासते १२८५
एष स्य ते मधुमाँ ५३१
एष स्य धारया ५८४
एष स्य पीतये सुतो १२७८
एष स्य मद्यो रसोऽव १२७७
एष स्य मानुषीष्वा १२७६
एष हितो वि नीयते १२६९
एतो उषा अपूर्व्या १७८; १७२८
एह देवा मयोभुवा १७३५
एह हरी ब्रह्मयुजा १६५८
एह्यूषु ब्रवाणि तेऽग्न ७; ७०५
एभिर्ददे वृष्ण्या १७८४
ओजस्तदस्य तित्विष १८१,१६५३
ओभे सुष्वन्द्र विश्पते १०१४

और्वभृगुवच्छुचिम् १८
क इमं माहुषीष्वा १९०
क ईं वेद सुते सचा ११७; १६९६
क ईं व्यक्ता नरः ४१३
कङ्काः सुपर्णा अनु १८६४
कण्वा इन्द्रं यदक्रत १३०८
कण्वा इव भृगवः १३६३
कण्वेभिर्वृष्णवा धृषद् ८६६
कदा चन स्तरीरसि ३००
कदा मर्तमराधसं १३४३
कदा वसो स्तोत्रं हर्यत २२८
कदु प्रचेतसे महे २१४
कनिक्रन्ति हरिरा ५३०
कया ते अग्ने अङ्गिर १५४९
कयां त्वं न ऊत्याभि १५८६
कया नश्चित्र आ १६९; ६८१
कविमग्निमुप स्तुहि ३१
कविमिव प्रशंस्यं ११४५
कविर्वेधस्या पर्येषि १३१८
कवी नो मित्रावरुणा ८४९
कश्यपस्य स्वर्विदो ३६१
कस्तमिन्द्र त्वा वसवा २८०; १६८१
कस्ते जमिर्जनानामग्ने १५३५
कस्त्वा सत्यो मदानां ६८३
कस्त्व नूनं परीणसि ३४
कायमानो वना त्वं ५३
किमित्ते विष्णो परिचक्षि १६२५
कुविदङ्गस्य प्र हि १६६८
कुविन्नु नो गविष्टये १६४९
कुष्ठः नो वामश्विना ३०५
कृण्वन्तो वरिवो गवे ८३१
कृष्णां यदेनीमसि १५४७
केतुं कृण्वं दिवस्परि ९५९
केतुं कृण्वन्नकेतवे १४७०
को अद्य युङ्क्ते ३४१
कृत्वा महीं अनुष्वधं ४१३
क्रीडुर्मखो न मंहयुः ९७४
क्वेयथ क्वेदसि १७१
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने १५६३

गम्भीरां उदधीरिव १७१०
गर्भे मातुः पितुष्पिता १३९७
गव्यो षु णो यथा पुरा १८६
गायत्रं त्रैष्टुभं जगत् १८३०
गायन्ति त्वा गायत्रिणं ३४२; १३४४
गाव उप वदावटे ११७; १६०२
गावश्चिद् वा समन्यवः ४०४
गिरस्त इन्द्र ओजसा १०४३
गिरा वज्रो न सम्भृतः ११२४
गिर्वणः पाहि नः सुतं १९५
गृणाना जमदग्निना ६६५
गृणे तदिन्द्र ते शव ३९१
गोत्रभिदं गोविदं १८५४
गोमन्न इन्द्रो अश्ववत् ५७४; १६२१
गोवित्पवस्व वसुविन् ९५१
गोषा इन्द्रो नृषा १०४५
गौर्धयति मरुतां १४२
घृतं पवस्व धारया १४३७
घृतवती भुवनानाम् ३७८
चक्रं यदस्याप्सु ३३१
चन्द्रमा अप्स्वा ४१७
चमूषच्छ्येनः शकुनो ११७७
चर्षणीधृतं मघवानं ३७४
चित्रं देवानामुदगादनीकं ६२९
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य ६४
जगृभ्मा ते दक्षिणम् ३१७
जघ्निवृत्रमामित्रियं ८१६
जज्ञानः सप्त मातृभिः १०१
जज्ञानो वाचमिष्यसि ९६०
जनस्य गोपा अजनिष्ट ९०७
जनीयन्तो न्वग्रवः १४६०
जराबोध तद्विविड्ढि १५; १६६३
जातः परेण धर्मणा ९०
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः ११९४
जुष्टो हि दूतो असि १७८१
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते १०३१
तं वः सखायो मदाय ५६९; १०९८
तं वो दस्ममृतीषहं ९३६; ६८५
तं वो वाजानां पतिं १६८६
तं सखायः पुरूरुचं १६८०

तं हिन्वन्ति मदच्युतं १७१७
तं हि स्वराज्यं वृषभं १२३४
तं होतारमध्वरस्य १५१४
तक्षथदी मनसो ५०७
तं गाथया पुराण्या १६३३
तं गूर्धया स्वर्णरं १०९; १६८७
ततो विराडजायत ६११
तत्ते यज्ञो अजायत १४३०
तत्सवितुर्वरेण्यं १४६१
तदग्ने द्युम्नमा भर ११३
तदया चित्त उक्थिनो ८८१
तदिदास भुवनेषु १४८३
तद्विप्रासो विपन्यवो १६७३
तद्विष्णोः परमं पदं १६७१
तद्वो गाय सुते सचा ११५; १६६६
तं ते मदं गृणीमसि ३८३; ८८०
तं ते यवं यथा गोभिः ७३६
तं त्वा गोपवनो १९
तं त्वा घृतस्नवीमहे १५२१
तं त्वा धर्तारमोण्योः ८०४
तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं ८३६
तं त्वा मदाय धृष्णव १०४४
तं त्वा विप्रा वचोविदः १०७७
तं त्वा शोचिष्ठदीदिवः ११०९
तं त्वा समिद्भिरंगिरो ६६१
तं दुरोषमभी नरः ६९९
तपोष्पवित्रं वितते ८७६
तमग्निमस्ते वसवो १३७४
तमस्य मर्जयामसि १६३१
तमिद्वर्धन्तु नो गिरो ११३६
तमिन्द्रं जोहवीमि ४६०
तमिन्द्रं वाजयामसि ११९; १२१२
तमीळिष्व यो अर्चिषा ११४९
तमु अभे प्रगायत ३८१
तमु त्वा नूनमसुर १४१२
तमु ष्टवाम यं गिर ८८५
तमु हुवे वाजसातय ७४८
तमोषधीर्देधिरे १८२४
तया पवस्व धारया १४१६
तरणिं वो जनानाम् २०४
तरणिरित्सिषासति २३८; ८६७
तरणिर्विश्वदर्शतो ६३५
तरत्स मन्दी धावति ५००; १०५७
तरत्समुद्रं पवमान ८५७
तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं २३७, ६८७
तव क्रत्वा तवोतिभिः १०५१
तव स्य इन्दो अन्धसो १२२६
तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव १२४५
तव त्यमूर्य नृतोऽप ४६६
तव धीरिन्द्र पौंस्यं १६४६
तव द्रप्सा उतप्रुत १३१७
तव द्रप्सो नीलवान् १८२३
तव श्रियो वर्ष्यस्येव ९८१
तवाहं भक्तमुत सोम ९२३
तवाहं सोम रारण ५१६; ९२१
तवेदिन्द्रावमं वसु २७०
तस्मा अरं गमाम वो १८३९
ता अस्य नमसा सहः १००७
ता अस्य पृशनायुवः १००६
ता नः शर्क पार्थिवस्य ११४५;१४६५
ता वो वाजवतीरिष ११५१
ताभिरा गच्छतं ९९३
ता वां सम्यगद्रुहुाण ९८६
ता वां गीर्भिर्विपन्युवः ८०२
तावानस्य महिमा ६२०
ता सम्राजा घृतासुती ९१२
ता हि शश्वन्त ईळत ८०१
ता हुवे ययोरिदं ८५३
तिस्रो वाच ईरयति ५२५; ८५९
तिस्रो वाच उदीरते ४७१; ८६९
तुचे तुनाय तासु नो ३९५
तुभ्यं सुतासो सोमाः ११३
तुभ्येमा भुवना कवे ७७७
तुरण्यवो मधुमन्तं १६१०
तुविशुष्म तुविक्रतो १७७१
ते अस्य सन्तु केतवो १४१५
ते आनत स्वमोकयं३ १४८१
ते नः सहस्रिणं ११९१
ते नो वृष्टिं दिवस्परि ११६५
ते पूतासो विपश्चितः ११०१
ते मन्वत प्रथमं ६०६
ते विश्वा दाशुषे १०२६
ते सुतासो विपश्चितः १८११
ते स्याम देव वरुण १०६९
तोशा वृत्रहणा हुवे १७०१
तोशासा रथयावाना १०७४
त्यमु षु वः सत्रासहं १७०; १६४२
त्यमु वो अपहणं ३५७
त्यमू षु वाजिनं ३३१
त्यं सु मेषं महया ३७७
त्रातारमिन्द्रं ३३३
त्रिंशद्धाम वि राजति ६३१; १३७८
त्रिकद्रुकेषु चेतनं ७२४
त्रिकद्रुकेषु महिषो ४५७; १४८६
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः ६१८
त्रिरस्मै सप्त धेनवो ५६०; १४२३
त्रीणि त्रितस्य धारया १०१५
त्रीणि पदा वि चक्रमे १६७०
त्वं यविष्ठ दाशुषो १२४६
त्वं राजेव सुव्रतो ९७२
त्वं वरुण उत मित्रो १३०६
त्वं बलस्य गोमतो ११५१
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु १०९४
त्वं समुद्रिया अपो ७७६
त्वं सिन्धूरवासृजो १८०२
त्वं सुतो मघित्तमो १३१४
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिः १३२५
त्वं सूर्ये न आ भज १०५१
त्वं सोम नृमादनः ९६५
त्वं सोम परि स्रव ९८१
त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र १३२१
त्वं ह त्यत्पणीनां १५९१
त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो ३०६
त्वं हि क्षैतवद्यशो ८४
त्वं हि नः पिता वसो ११७०
त्वं हि राधसस्पते १३११
त्वं हि वृत्रहन्तमो १७९१
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र १२४९
त्वं हि शूरः सनिता १४३४
त्वं ह्याङ्ग दैव्यं ५८३; ९१८

त्वं ह्यहि चेरवे २४०; १५८१
त्वं जामिर्जनानामग्ने १५३६
त्वं दाता प्रथमो राधसां १४९३
त्वं तां च महित्रत १०१८
त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं ७१८
त्वं न इन्द्रा भर ४०५; ११६९
त्वं नक्षित्र ऊत्या ४१; १६१३
त्वं नृचक्षा असि सोम ९५६
त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म १५०५
त्वं नो अग्ने महोभिः ६
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं ६१
त्वमग्ने यज्ञानां होता २; १४७४;
त्वमग्ने वसूँरिह ९६
त्वमग्ने सप्रथा असि १४०७
त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः १४७; १७१३
त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने ४१
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि ३११; १६३७
त्वमिन्द्र बलादधि ११०
त्वमिन्द्र यशा अस्यृजी २४८; १४११
त्वमिन्द्राभिभूरसि १०१६
त्वमिमा ओषधीः ६०४
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र १३५६
त्वं पुरू सहस्राणि १५८१
त्वमेतदधारयः कृष्णासु ५९५
त्वया वयं पवमानेन ५९०
त्वया ह स्विद्युजा ४०३
त्वष्टा नो दैव्यं वचः १९९
त्वां यज्ञैरवीवृधन् १०५५
त्वां रिहन्ति धीतयो १०१७
त्वां विश्वे अमृत जायमानं ११४१
त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो १६४७
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत ११७१
त्वां सुतमभ्यमृतं १५६८
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा ९०८
त्वामग्ने पुष्करादध्य ९
त्वामिच्छवसस्पते १७६९
त्वामिदा ह्यो नरो ३०१; ८१३
त्वामिद्धि हवामहे १३४; ८०९
त्वावतः पुरूवसो १९३
त्वे अग्ने स्वाहुत ३८
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति १४८५
त्वे विश्वे सजोषसो १०९५
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति ८३
त्वे सोम प्रथमा १५०६
दधन्व वा यदीमनु ९४
दधिक्राव्णो अकारिषं ३५८
दविद्युतत्या रुचा ६५४
दाना मृगो न वारणः १६२७
दाशेम कस्य मनसा १५५०
दिवः पीयूषमुत्तमं ११२७
दिवो धर्तासि शुक्रः १२४३
दिवो नाभा विचक्षणो ११९९
दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा १०९१
दुहान ऊधर्दिव्यं ६७६
दुहानः प्रत्नमित्पयः ७६०
दूतं वो विश्ववेदसं ११
दूरादिहेव यत्सतो २१९
देवानामिदवो महत् १३८
देवेभ्यस्त्वा मदाय ११८१
देवो वो द्रविणोदाः ५५; १५१३
दोषो आगाद् बृहद्गाय १७७
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिः ६८६
द्रप्सः समुद्रमभि यत् १८४८
द्विता यो वृत्रहन्तमो १७९१
द्विर्यं पंच स्वयशसं १३३०
धर्ता दिवः पवते ५५८; १२१८
धानावन्तं करम्भिणम् २१०
धिया चक्रे वरेण्यो १४७९
धीभिर्मृजन्ति वाजिनं ९४१
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता १८३६
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा १०५९
न कि इन्द्र त्वदुत्तरं २०३
नकि देवा इनीमसि १७६
न किरस्य सहन्त्य १४१३
नकिष्टं कर्मणा २४३; ११५५
न किष्ट्वद्रथीतरो ९५०
न की रेवन्तं सख्याय १३९०
न वा वसुर्नि यमते १६६७
न वेमन्यदा पपन ७२०
न तमंहो न दुरितं ४१६
न तस्य मायया च १०४
न ते गिरी अपि मृष्ये १७९९
न त्वा बृहन्तो अद्रयो २९६
न त्वावाँ अन्यो ६८१
न त्वा शतं च न १२१५
नदं व ओदतीनां १५११
न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु ८६८
नमः सखिभ्यः १८२८
नमसेदुप सीदत १४४६
नमस्ते अग्न ओजसे ११; १६४८
न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा ६८८
नराशंसमिह १३०९
नव यो नवतिं पुरो १४५१
न संस्कृतं प्र मिमीतो १७५३
न सीमदेव आप २६८
न हि ते पूर्तमक्षिपद्भुवन्नेमानां ७०७
न हि त्वा दूर देवा न ७१०
न हि वश्चरमं च न २४१
न ह्यं३ग पुरा च न १५११
नाके सुपर्णमुप ३२०; १८४६
नाभा नाभिं न आ ददे ११२६
नाभिं यज्ञानां सदनं ११४१
निष्टोत्रो वनस्पतिः १२८१
नि त्वा नक्ष्य विश्पते २६
नि त्वमग्ने मनुर्दधे ५४
नियुत्वान्वायवा गह्ययं ६००
नीव शीर्षाणि मृद्ध्वं १६५६
नूनं पुनानोऽविभिः १३१४
नू नो रयिं महामिन्दो ९१६
नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतं ११८५
नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या ७३५
नृभिर्येमाणो हर्यतो ८५८
नेमिं नमन्ति चक्षसा ९३१
पदं देवस्य मीळुषो १५७१
पदा पणीनराधसो १३५५
पन्यंपन्यमित्सोतारः १२३; १६५७
पन्यासं जातवेदसं १५६६
परि कोशं मधुश्चुतं ५७७
परि त्यं हर्यतं ५५१; १३१९;१६८१

परि शुक्रं मनन्द्रयि ४९६
परि णः शर्मयन्त्या ८९७
परि णो अश्वमश्वविद् १२११
परि प्र धन्वेन्द्राय ४१७; १३६७
परि प्रासिष्यदत्कविः ४८६
परि प्रिया दिवः ४७६; ९३५
परि यत्काव्या १३३१
परि वाजपतिः कविः ३०
परि विश्वानि चेतसा ९७०
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं ८९९
परि स्य स्वानो १२४०
परि स्वानस्य दक्षसे १३१५
परि स्वानास इन्दवो ४८५; ११२२
परि स्वानो गिरिष्ठाः ४७५; १०९३
परीतो षिञ्चता सुतं ५१२; १३१३
पर्जन्यः पिता महिषस्य १३१७
पर्यू षु प्र धन्व ४१८; १३६४
पर्षि तोकं तनयं १६१४
पवते हर्यतो हरिरति ५७६; ७७३
पवन्ते वाजसातये ११८९
पवमान धिया हितो ९११
पवमान नि तोशसे ११३६
पवमानमवस्यवो ११८८
पवमान रसस्तव ८९०
पवमान रुचारुचा ९०५
पवमान व्यश्नुहि १३११
पवमान सुवीर्यं रयिं १४४९
पवमानस्य जिघ्नतो १३१०
पवमानस्य ते कवे ६५७
पवमानस्य ते रसो; ८९१
पवमानस्य ते वयं ७८७
पवमानस्य विश्ववित् ९१८
पवमाना असृक्षत पवित्रमति ५११
पवमाना असृक्षत सोमाः १६९९
पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत १७००
पवमानास आशवः १७०१
पवमानो अजीजनत् ४८४; ८८९
पवमानो अभि स्तृधो ११३१
पवमानो असिष्यदत् १४३९
पवमानो रथीतमः १३११

पवस्व दक्षसाधनो ४७४; ९१९
पवस्व देव आयुष ४८३; १२३५
पवस्व देववीतय ५७१; १३२६
पवस्व देववीरति १०३७
पवस्व मधुमत्तम ५७८; ६९१
पवस्व वाचो अग्रियः ७७५
पवस्व वाजसातमो ५११
पवस्व वाजसातये १०१६
पवस्व विश्वचर्षण ८९६
पवस्व वृत्रहन्तम ९६६
पवस्व सृष्टिमा सु नो १४३५
पवस्व सोम द्युम्नी ४३६
पवस्व सोम मधुमाँ ५३१
पवस्व सोम मन्दयन् १८१०
पवस्व सोम महान् ४१९; १२४१
पवस्व सोम महे ४३०; १३३१
पवस्वेन्दो वृषा सुतः ४७९; ७७८
पवित्रं ते विततं ५६५; ८७५
पवीतारः पुनीतन १०५०
पातं नो मित्रा पायुभिः ९८७
पाता वृत्रहा सुतमा १६५९
पात्यग्निर्विपो अग्रं ६१४
पान्तमा वो अन्धस १५५; ७१३
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा १८१७
पावका नः सरस्वती १८९
पावमानीर्दधन्तु न १३०१
पावमानीर्यो अध्येत् ११९९
पावमानीः स्वस्त्ययनीः १३००
पावमानीः स्वस्त्ययनीभिर्गच्छति १३०३
पाहि गा अन्धसो मद २८९
पाहि नो अग्न एकया ६६;१५४४
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो १५४५
पिबन्ति मित्रो अर्यमा १७८६
पिबा त्वऽस्य गिर्वणः १३९३
पिबा सुतस्य रसिनो १३९;१४९१
पिबा सोममिन्द्र ३९८;९१७
पुनरूर्जा नि वर्तस्व १८३२
पुन्यता दक्षसाधनं ११५९
पुनानः कलशेष्वा ११८३
पुनानः सोम जागृवि ५१९

पुनानः सोम धारयापो ५११;६७५
पुनानास्त्वमूषदो ११७९
पुनाने तन्वा मिथः १५९७
पुनानो अक्रमीदभि ४८८;९२४
पुनानो देववीतय ८४१
पुनानो वरिवस्कृधि ८४१
पुनानो वारे पवमानो १०८०
पुरः सद्य इत्थाधिये ११११
पुरां भिन्दुर्युवा ३५९;१२५०
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि ११६७
पुरु त्वा दाशिवाँ वोचे ९७
पुरुष एवेदं सर्वं ६१९
पुरुहूतं पुरुष्टुतं ७१४
पुरुतमं पुरुणामीशानं ७४१
पुरुरुणा चिद्ध्यस्यवो ९८५
पुरोजिती वो अन्धसः ५४५;६९७
पूर्वस्य यत्ते अद्रिवो ६४८
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो ८१९
पौरो अश्वस्य १५८०
प्र कविर्देववीतये ९६८
प्र काव्यमुशनेव ५२४;१११६
प्र केतुना बृहता ७९
प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य ६०९
प्र गायताभ्यर्चाम ५३५
प्रजामृतस्य पिप्रतः १३०९
प्र त आश्विनीः पवमान ८८६
प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट १६१६
प्रति त्यं चारुमध्वरं १६
प्रति प्रियतमं रथं ४१८;१७४३
प्रति वां सूर उदिते १०६७
प्रति ष्या सूनरी जनी १७२५
प्र तु द्रव परि कोशं ५१३;६७७
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः ७३९
प्र ते धारा असश्चतो १७६१
प्र ते धारा मधुमतीः ५३४
प्र ते धोतारो रसं १३३३
प्रत्न पीयूषं पूर्व्य १४९४
प्रत्येम हरसा हरः ९५
प्राञ्चं देवानां विशः ६३६
प्रत्यस्मै पिपीषते ३५२;१४४०

*

प्रत्यु अदृश्रायत् ३०३;७११
प्रथश्च यस्य सप्रथश्च ५९९
प्र देवमच्छा मधुमन्त ५६३
प्र दैवोदासो ५१;१५१७
प्र धन्वा सोम जागृविः ५६७
प्र धारा मधो अग्रियो ११२९
प्र न इन्दो महे तु न ५०९
प्र पवमान धन्वसि ९६३
प्र पुनानाय वेधसे ५७३
प्रप्र क्षयाय पन्यसे ९३७
प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं ३६०
प्रभङ्गी शूरो मघवा १४५९
प्र भूर्जयन्तं महां ७४
प्रभो जनस्य वृत्रहन् ६४९
प्र मंहिष्ठाय गायत १०६।८७८
प्र मन्दिने पितुमदर्चता ३८०
प्र मित्राय प्रार्यम्णे २५५
प्र यद्वाचो न भूर्णयः ४९१,८३१
प्र युजा वाचो अग्रियो ११३०
प्र यो राये निनीषति ५८
प्र यो रिरिक्ष ओजसा ३१२
प्र व इन्द्राय बृहते २५७
प्र व इन्द्राय मादनं १५६:७१६
प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय ४४६;१११३
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो १५७५; १७०३
प्र वां महि द्यवी १५९६
प्र वाचमिन्दुरिष्यति १२०१
प्र वाज्यक्षाः सहस्रधारस्तिर. ११६०
प्र वो प्रियो मन्द्रयुवो ११५३
प्र वो महे मतयो ४६२
प्र वो महे महे ३१८; १७९३
प्र वो मित्राय गायत ११४३
प्र वो यह्वं पुरूणाम् ५९
प्र सम्राजमसुरस्य ७८
प्र सम्राजे चर्षणीनाम् १४४
प्र स विश्वेभिरग्निभिर्धामभिः १५०४
प्रसवे त उधीरते १२०६
प्र सुन्वानायान्धसो ५५३,७७४;१३८६
प्र सेनानीः शूरो ५३३
प्र सो अग्ने तवातिभिः १०८; १८१२
प्र सोम देववीतये ५१४; ७६७
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा ११६१
प्र सोमासो अधन्विषुः ९६१
प्र सोमासो मदच्युतः ४७७; ७६९
प्र सोमासो विपश्चितो ४७८; ७६४
प्र स्वानासो रथा इव ११११
प्र हंसासस्तृपला ११९७
प्र हिन्वानो जनिता ५३६
प्र होता जातो महान् ७७
प्र होत्रे पूर्व्यं वचो ९८
प्राचीमनु प्रदिशं याति १५९१
प्राणा त्रिशुर्महीनां ५७०; १०१३
प्रातरग्निः पुरुप्रियो ८५
प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं ९४५
प्रास्य धारा अक्षरन् १७६५
प्रियो नो अस्तु विश्पतिः १६१९
प्रेता जयता नर १८६२
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि १३७५
प्रेष्ठ वो अतिथिं ५, १२४४
प्रेष्ठाभीहि धृष्णुहि ४१३
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः ५६
अवासीदिन्दुरिन्द्रस्य ५५७, ११५१
प्रोथदश्वो न यवसे १२२०
प्रो ष्वस्मै पुरोरथं १८०१
बट् सूर्य श्रवसा महाँ १७८९
बण्महाँ असि सूर्य १७६; १७८८
बभ्रवे नु स्वतवसे १४४४
बलविज्ञायः स्थविरः १८५३
बृबदुक्थं हवामहे २१७
बृहादिन्द्राय गायत २५८
बृहद्भानो अर्चिभिः ३७
बृहद्वयो हि भानवो ८८
बृहन्नदिष्म एषां १३३९
बृहस्पते परि दीया रथेन १८५१
बोधन्मना इदस्तु नो १४०
बोधा सु मे मघवन् ९१९
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं ३२१
ब्रह्म प्रजावदा भर १३९८
ब्रह्मा देवानां पदवीः ९४४
ब्रह्माण इन्द्र ४२९
ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं ६६८
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः २१९
भगो न चित्रो ४४९
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः १८७४
भद्रं नो अपि वातय ४२१
भद्रंभद्रं न आ भरे १७३
भद्रं मनः कृणुष्व १५६०
भद्रावस्ता समन्या३ वसानो १४००
भद्रो नो अग्निराहुतो १११;१५५९
भद्रो भद्रया सचमान १५४८
भरामेध्मं कृणवामा १०६५
भिन्धि विश्वा अप द्विषः १३४;१०७०
भूयाम ते सुमतौ १४२१
भूरि हि ते सवना १८००
भ्रजान्त्यग्ने समिधान ६१५
मघोन आ पवस्व ११८४
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु १६८३
मत्सि वायुमिष्टये १२५४
मत्स्यपायि ते महः १४३१
मत्स्वा सुशिप्रिन्हः ८१४
मदच्युत्क्षेति सादने ११९८
मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं १३४८
मनीषिभिः पवते ८२१
मन्दन्तु त्वा मघवन् १७२२
मन्दं होतारमृत्विजं १५४३
मन्द्रया सोम धारया ५०६
मन्ये वां द्यावापृथिवी ६२१
मयि वर्चो अथो यशो ६०१
मर्माणि ते वर्मणा १८७०
महत्सोमो महिषश्चकारापां५४१,११५५
महाँ इन्द्रः पुरश्चनो २६६
महाँ इन्द्रो य ओजसा १३०७
महान्तं त्वा महीरनु १०४०
महि श्रीणामवस्तु १९१
मही मित्रस्य साधथः १५९८
महीमे अस्य वृष्ण नाम ११०६
महे च न त्वाद्रिवः २९१
महे नो अद्य बोधयोषो४२११;१७४०
महो नो राय आ भर ११२४
मा चिदन्यद्वि शंसत २४१;१६६०

मा ते राधांसि मा त १७२४
मा त्वा मूरा अविष्यवो ७१२
मा न इन्द्र परा वृणग् २६०
मा न इन्द्र पीयत्नवे २८०६
मा न इन्द्राभ्या ३ दिशः १२८
मा नो अग्ने महाधने १६५०
मा नो अज्ञाता वृजना १४५७
मा नो हृणीथा अतिथि ११०
मा पापत्वाय नो ९१८
मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य १६०५
मित्रं वयं हवामहे ७९३
मित्रं हुवे पूतदक्षं ८४७
मूर्धानं दिवो अरति ६७;११४०
मृगो न भीम कुचरो १८७३
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो ११८१
मृज्यमानः सुहस्त्या ५१७;१०७२
मेढिं न त्वा वज्रिण ३२७
मेधाकारं विदथस्य ९८४
मो षु त्वा वाघतश्च २८४;१६७५
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुः ८२६
य आनयत्परावतः १२७
य आर्जीकेषु कृत्वसु ११६४
य इदं प्रतिपप्रथे १७०९
य इद्ध आविवासति ११५०
य इन्द्र चमसेष्वा १६१
य इन्द्र सोमपातमो ३९४
य उग्र इव शर्यहा १७०७
य उग्रः सन्ननिष्टृतः १६९८
य उक्षिया अपि या ५८५
य ऋते चिदभिश्रिषः २४४
य ऐक्ष इद्विदयते ३८९;१३४१
य ओजिष्ठस्तमा भर ८२०
यः पावमानीरध्येति १२९८
यः सत्राहा विचर्षणिः २८६
यः सोमः कलशेष्वा ११००
यः स्नीहितीषु पूर्व्यः १३८०
यं रक्षन्ति प्रचेतसो १८५
यं वृत्रेषु क्षितय ३३७
यच्चिद्धि शश्वता १६१८
यच्छक्वासि परावति २६४
यजा नो मित्रावरुणा १५३७
यजामह इन्द्रं वज्र दक्षिणं ३३४
यजिष्ठं त्वा यजमाना १८१४
यजिष्ठं त्वा ववृमहे ११२;१४१३
यज्जायथा अपूर्व्यं ६०१;१४२९
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् १२१;१६३९
यज्ञं च नस्तन्वं च ११११
यज्ञस्य केतुं प्रथमं ९०९
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा १०७३
यज्ञायज्ञा वो अग्नये ३५,७०३
यं जनासो हविष्मन्तो १५६५
यत इन्द्र भयामहे १७४,१३२१
यत्ते दिक्षु प्रराध्यं मनो ११७४
यत्र क्व च ते मनो ७०६
यत्र बाणाः संपतन्ति १८६६
यत्सानोः सानवारुहो १३४५
यत्सोम चित्रमुक्थ्यं ९९९
यत्सोममिन्द्र विष्णवि ३८४
यथा गौरो अपा कृतं २५२;१७२१
यददो वात ते गृहे १८४२
यदद्भिः परिषिच्यसे ७८५
यदद्य कच्च वृत्रहन् ११६
यदद्य सूर उदिते १३५१
यदा कदा च मीढुषे २८८
यदिन्द्र चित्र म इह ३४५;११७२
यदिन्द्र नाहुषीष्वा २६२
यदिन्द्र प्रागपागुदग्न्यग्वा २७२;१२३१
यदिन्द्र यावतस्त्वमेता ३१०;१७९६
यदिन्द्र शासो अव्रतं २९८
यदिन्द्राहं यथा त्वै १२२;१८३४
यदिन्दो अनयद्रितो १४८
यदि वीरो अनुष्यादृ ८२
यदीं गणस्य रशनामृ १७४८
यदी वहन्त्याशवो ३५६
यदी सुतेभिरिन्दुभिः १४४२
यदुदीरत आजयो ४१४;१००४
यद्द्य च त्वा इन्द्र ते शतं २७८;८६२
यद्युञ्जाथे वृषणम् १७५९
यद्वर्चो हिरण्यस्य ६२४
यद्वा उ विश्पतिः ११४
यद्वा रुमे रुशमे ११३१
यद्वाहिष्ठं तदग्नये ८६
यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे २०७;१०७२
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र ११७३
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा १४१५
यया या आकरामहै १५२८
यवंयवं नो अन्धसा ९७५
यशो मा द्यावापृथिवी ६११
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ १३४२
यस्त इन्द्र नवीयसीं ८८४
यस्ते अनु स्वधामसत् ७३८
यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र ११६
यस्ते मदो युज्यश्चारुः ९२८
यस्ते मदो वरेण्यः ४७०;८१५
यस्ते शृङ्गवृषो नपात् ७२७
यस्यामग्ने हविष्पतिः ८४५
यस्मादिन्द्रन्त कृष्टयश्चर्कृत्यानि १५१६
यस्मिन्विश्वा अधि ७२३
यस्य त इन्द्रः पिबायस्य १०९७
यस्य ते पीत्वा वृषभो ६९३
यस्य ते महिना महः १७७३
यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य १०७१
यस्य ते सख्ये वयं ७७९
यस्य त्यच्छम्बरं ३९१
यस्य त्रिधातवृतं १५७१
यस्यायं विश्व आर्यो १६०९
यस्येदमा रजोयुजस्तुजे ५८८
या इन्द्र भुज आभरः २५४
या ते मीमान्यायुधा ७८०
या दस्रा सिन्धुमातरा १७१९
या वां सन्ति ९९२
यावित्था श्लोकमा दिवो १७३६
या सुनीथे शौचद्रथे १७४१
यास्ते धारा मधुश्चुतो ९७९
युंक्ष्वा हि केशिना १३४६
युंक्ष्वा हि वाजिनीवती १७३३
युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम ३०१
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं १४६८
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य ७१२
युञ्जन्त्यस्य काम्या १४६९

युञ्जे वाचं शतपदीं १८१९
युध्मं सन्तमनर्वाणं १६४३
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं ७५४
युवं हि स्थः स्वःपती: १००१
ये ते पन्था अधो दिवो १७२
ये ते पवित्रमूर्मयो ७८८
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुः १५०१
येन ज्योतिष्यायवे ८८१
येन देवाः पवित्रेणात्मानं १३०२
येना नवग्वा दध्यङ् ९३९
येना पावक चक्षसा ६३७
ये सोमासः परावति ११६३
यो अग्निं देववीतये ८४६
योगेयोगे तवस्तरं १६३; ७४३
यो जागार तमृचः १८२६
यो जिनाति न जीयते ९७८
यो धारया पावकया ६९८
यो न इदमिदं पुरा ४००
यो नः स्वोऽरणो यश्च १८७१
योनिष्ट इन्द्र सदने ३१४
यो नो वनुष्यन् ३३६
यो मंहिष्ठो मघोनाम् ६४५
यो रयिं वो रयिन्तमो ३५१
यो राजा चर्षणीनां १७३; ९३३
यो वः शिवतमो रसः १८३८
यो विश्वा दयते वसु ४४; १५८३
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि ६९०
रयिं नश्चित्रमश्विनम् १०५६
रसं ते मित्रो अर्यमा १०७८
रसाय्यः पयसा ८१७
राजानावनभिद्रुहा ९११
राजानो न प्रशस्तिभिः ११११
राजा मेधाभिरीयते ८३३
रायः समुद्रांश्चतुरो ८७१
राया हिरण्यया १०६८
राये अग्ने महे ९३
रुशद्वत्सा रुशती १७१०
रेवतीर्नः सधमाद १५३; १०८४
रेवाँ इद्रेवत स्तोता १८०४
वक्ष्यन्ते वां कक्ष्यासो १७३०
वयः सुपर्णा उप ३१९
वयं घ त्वा सुतावन्तः २६१; ८६४
वयं घा ते अपि स्मसि २३०
वयं ते अस्य राधसो १२३९
वयामिन्द्र त्वावयो १३१
वयमु त्वामपूर्व्य ४०८; ७०८
वयमु त्वा तदिदर्था १५७; ७१९
वयमेनमिदा २७१; १६९१
वयश्चित्ते पतत्रिणो ३६७
वरिवोधातमो भुवो ६९१
वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो ७९५
वषट् ते विष्णवास १६१७
वसन्त इन्नु रन्त्यो ६१६
वसुरग्निर्वसुश्रवा ११०८
वस्या इन्द्रासि मे ११९
वाचमष्टापदीमहं ९९०
वाजी वाजेषु धीयते १४७८
वात आ वातु भेषजं १८४; १८४०
वातोपजूत इषितो ९८३
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा १६३०
वायो शुक्रो अयामि १६१८
वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति ७११
वावृधानः शवसा १४८४
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो ११९३
वास्तोष्पते ध्रुवा २७५
विघ्नन्तो दुरिता ८३१
वि चिद् वृत्रस्य दोधतः १६५२
वि त्वदापो न पर्वतस्य ६८
विदा मघवन् विदा ६४१
विदा राये सुवीर्यं ६४४
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं ७१९
विधुं दद्रा समने ३१५; १७८२
वि न इन्द्र मृधो जहि १८६८
विपश्चिते पवमानाय १६१५
विभक्तासि चित्रभानो १४९८
विभूतरातिं शिप्र १६८८
विभूषन्नग्न उभयाँ ११६९
विभोष्ट इन्द्र राधसो ३६६
विभ्राजं ज्योतिषा १०१७
विभ्राड् बृहत्पिबतु ६१८; १४५३
विभ्राड् बृहत्सुभृतं १४५४
वि रक्षो वि मृधो जहि १८६७
विश्यक्थ महिना १६६१
विशो विशो वो अतिथिं ८७; १५६४
विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः १५८९
विश्वतोदावन्विश्वतो ४३७
विश्वस्मा इ स्वर्दृशे ८४०
विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो ४५०
विश्वाः पृतना अभिभूतरं ३७०;९३०
विश्वा धामानि विश्वचक्ष ८८८
विश्वानरस्य वस्पतिम् ३६४
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु ६१०
विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं १६१७
वि षु विश्वा अरातयो १८०३
विष्णोः कर्माणि पश्यत १६७१
वि स्रुतयो यथा पथा ४५३; १७७०
वीडु चिदारुजत्नुभिः ८५१
वीतिहोत्रं त्वा कवे १५१३
वृक्श्चिदस्य वारण १६९१
वृत्रखादो वलं रुजः १७१९
वृत्रस्य त्वा श्वसथा ३१४
वृषणं त्वा वयं १५४०
वृषा पवस्व धारया ४६९; ८०३
वृषा पुनान आयुषि १०००
वृषा मतीनां पवते ५५९; ८२१
वृषा यूथेव वंसगः १६११
वृषा शोणो अभि ८०६
वृषा सोम द्युमाँ ५०४; ७८१
वृषा ह्यसि भानुना ४८०; ७८४
वृषो अग्निः समिध्यते १५३९
वृष्टिं दिवः परि स्रव ११८६
वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती १४६७
वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो ७८१
वेत्था हि निर्ऋतीनां ३९६
वेत्था हि वेधो १४७६
व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे १६४०
शंसेदुक्थं सुदानव ७१७
शं नो देवीरभिष्टये ३३
शं पदं मघं ४४१
शकेम त्वा समिधं १०६६

शग्ग्यू३षु शचीपत १५३; १५७९
शचीभिर्नः शचीवसू २८७
शतानीकेव प्र जिगाति ८१२
शशमानस्य वा नरः १५९४
शाक्मना शाको अरुणः १७८३
शाचिगो शाचिपूजनायं ७२६
शिक्षा ण इन्द्र राय १६४४
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं १८३५
शिक्षेयमिन्महयते १७९७
शिशुं जज्ञानं हरिं १३३४
शिशुं जज्ञानं हर्यतं ११७५
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः १२४२
शुक्रं ते अन्यद्यजतं ७५
शुचिः पावक उच्यते ९६७
शुनं हुवेम मघवानं ३१९
शुभ्रमन्धो देववातमप्सु १००९
शुम्भमाना ऋतायुभिः १०३५
शुष्मी शर्धो न मारुतं १४७३
शूरग्रामः सर्ववीरः १४०९
शूरो न धत्त आयुधा ११२९
शृणुतं जरितुः ९१७
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः ८९४
शेषे वनेषु मातृषु ४६
श्रत्ते दधामि प्रथमाय ३७१
श्रायन्त इव सूर्यं १५७; ११११९
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं २०८
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः ५०
श्रुधी हवं तिरश्च्या ३४६; ८८३
श्रुधी हवं विपिपानस्य १७९८
श्रुष्टधेमे नवस्य मे १०६
स दधानो वसुष्कविः १५६१
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिः १८५१
स ईं रथो न १४७१
सं ते पयांसि समु ६०३
सं वत्स इव मातृभिः १०९९
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं ८३७
सखाय आ नि ५६८; ११५७
सखाय आ शिषामहे ३९०
सखायस्त्वा ववृमहे ६१
सख्ये त इन्द्र वाजिनो ८२८
स घा तँ वृषणं ४२४
स घा नः सूनुः १६३५
स घा नो योग आ ७४१
स घा यस्ते दिवो ३६५
संक्रंदनेनानिमिषेण १८५०
सख्यमित्था वृषेदसि २६३
सत्राहणं दाधृषिं ३३५
स त्रितस्याधि सानवि १२९५
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त ८१०
सदसस्पतिद्भुतं १७१
सदा गावः शुचयो ४४१
सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा १९६
स देवः कविनेषितो ११९७
स न इन्द्रः शिवः १४५१
स न इन्द्राय यज्यवे ५९१; ६७३
स न ऊर्जे व्य३व्ययं १४३८
स नः पवस्व शं गवे ६५३
स नः पुनान आ भर ७८९
स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा ६६१
सना च सोम जेषि १०४७
सना ज्योतिः सना १०४८
सता दक्षमुत १०४३
सनादग्ने मृणसि ८०
सनेमि त्वमस्मदा १६१३
स नो दूराच्चासाच्च १६१६
स नो भगाय वायवे १०८३
स नो मन्द्राभिरध्वरे १४७५
स नो महाँ अनिमानो १६६४
स नो मित्रमहः १७१३
स नो विश्वा दिवो १७३४
स नो वृषन्नमुं चरुं १६११
स नो वेदो अमात्यमग्नी १३८१
स नो हरीणां पत १६१२
स देवैः शोभते ९१०
स पवस्व मदिन्तम १२०९
स पवस्व य आविथेन्द्रं ४९४
स पवित्रे विचक्षणो १२९३
स पुनान उप सूरे १३५८
स पुष्यो महोनां ३५५
सप्त त्वा हरितो रथे ६४०
सप्तिं मृजन्ति वेधसो १७६६
स प्रथमे व्योमनि देवानां ७४७
स मज्मानो अमृतस्य १४१४
समस्त्वमिमवसे ११६८
समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः ६०७
स मर्मृजान आयुभिः १७६३
समस्य मन्यवे विशो १३७; १६५१
स महा विश्वा १३०५
ममानो अश्वा स्वर्हाः १७५१
स मामृजे तिरो १६९०
समिद्धमग्निं समिधा १५६७
समिद्रेणोत वायुना १०८१
समिद्धो रायो बृहतीः १६७८
समी वत्सं न मातृभिः ११५८
समीचीना अनूषत ९०३
समीचीनास आशत ११२५
समुद्रो अप्सु मामृजे १०४१
समु प्रिया अनूषत ८१९
समु प्रियो मृज्यते सानो १४०१
समु रेमासो अस्वरन् ९३२
समेत विश्वा ओजसा ३७२
सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो १४१९
सम्मिश्लो अरुषो भुवः ८१७
सम्राजा या घृतयोनी ११४४
स योजत उरुगायस्य ११९८
स योजते अरुषा ७५०
सरूप वृषभा गहीमो १६५५
स रेवाँ इव विश्पतिर्दैव्यः १६६५
स वर्धिता वर्धनः १३५९
स वह्निरप्सु दुष्टरो ९७१
स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु १४१७
सा वाजी रोचना १२९४
स वाज्यक्षाः सहस्ररेताः ११३१
स वायुमिन्द्रमश्विना ११३४

स वीरो दक्षसाधनो १३८८
स वृत्रहा वृषा १२९६
स व्यामनु स्फिग्यं वावृसे १६०६
स सुतः पीतये १२९२
स सुन्वे यो वसूनां ५८१; १०९६
स सुनुर्मातरा ९३६
सह रय्या नि वर्तस्व १८३३
सहर्षभाः सहवत्साः ६२६
सहस्रधारः पवते ८७४
सहस्रधारं वृषभं १३९५
सहस्तन इन्द्र ६१५
सहस्रशीर्षाः पुरुषः ६१७
स हि पुरु चिदोजसा १८१५
स हि ष्मा जरितृभ्य ९६९
साकं जातः क्रतुना १४८७
साकमुक्षो मर्जयंत ५३८; १४१८
सा नो अद्याभरद्वसुः १७४१
सान्हान्विश्वा अभियुजः १५५८
सिध्वेति नमसावटमुच्चाचक्रं १६०४
सीदन्तस्ते वयो ४०७
सुत एति पवित्र आ ९०१
सुता इन्द्राय वायवे ७६६
सुतासो मधुमत्तमाः ५४७; ८७१
सुनीथो या स मर्त्यो २०६
सुनोता सोमपाव्ने २८५
सुप्रावीरस्तु स क्षयः १३५१
सुमन्मा वस्वी १६५४
सुरूपकृत्नुमूतये १६०; १०८७
सुवितस्य वनामहे ८९३
सुषमिद्धो न आ वह १३४७
सुषहा सोम तानि ते १७६७
सुष्वाणास इन्द्र ३१६
सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना ११०३
सूर्यस्येव रश्मयो १३७०
सो अग्नियों वसुर्गृणे १७३९
सो अर्षेन्द्राय पीतये ९८०
सोम उ ष्वासः सोतृभिरधि ५१५,९९७
सोमः पवते जनिता ५१७; ९४३
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं ५७१; ९४०
सोमः पुनानो अर्षति ११८७
सोमः पूषा च १५४
सोमं गावो धेनवो ८६०
सोमं राजानं वरुणं ९१
सोमा असृग्रमिन्दवः ११९६
सोमाः पवन्त इन्दवो ५४८; ११०१
सोमानां स्वरणं १३९; १४६३
स्तोत्रं राधानां पते १६००
स्वरन्ति त्वा सुते ८६५
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः १८७५
स्वादिष्ठया मदिष्ठया ४६८, ६८९
स्वादोरित्था विषूवतो ४०९; १००५
स्वायुधः पवते देव ६७८
हथो वृत्राण्यार्या ८५५
हरी त इन्द्र शमश्रूण्युतो ६२३
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः १४४५
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः ९०४
हिन्वानासो रथा ११२०
हिन्वानो हेतृभिः ६५५
होता देवो अमर्त्यः १४७७